हिन्दी व्याकरण-6

पाठ – 1 भाषा, लिपि, बोली और व्याकरण

बातों-बातों में

1. भाषा के माध्यम से।
2. भाषा के दो रूप होते हैं–
   1. मौखिक, 2. लिखित
3. लिखकर या पढ़कर भाव व्यक्त करना, लिखित भाषा है।
4. लिखित रूप के संकेत चिह्न लिपि कहलाते हैं।
5. व्याकरण के द्वारा हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है।

लिखित में

(क) 1. भाषा भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है।
  2. **मौखिक भाषा** को बोलकर या सुनकर समझते हैं, जबकि लिखकर या पढ़कर भावों का आदान-प्रदान करने को **लिखित भाषा** कहते हैं।
  3. नेपाली।
  4. रोमन।
  5. भाषा से सम्बन्धित नियम ही हमें शुद्धता या अशुद्धता का ज्ञान कराते हैं।

(ख) 1. (ii) मौखिक
  2. (iii) भाष्
  3. (i) ब्राह्मी
  4. (ii) राजभाषा

(ग) 1. (×), 2. (✓), 3. (×), 4. (×), 5. (✓)

(घ) 1. शुद्ध, 2. 22, 3. फारसी, 4. हिंदी, 5. हिंदी दिवस।

सोच-समझ से

1. देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है।
2. अत्यंत सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा **बोली** कहलाती है; जैसे–ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी आदि।
3. भाषा के कारण ही मनुष्य पशु-पक्षियों से अलग है।

कुछ करके देखिए

खड़ी– 1. सिंधी, 2. उड़िया, 3. तमिल, 4. हिंदी, 5. मणिपुरी।

आड़ी–1. मलयालम, 2. तेलुगू, 3. संथाली, 4. बोडो, 5. डोगरी।

✦ छात्र स्वयं करें।

पाठ – 2 वर्ण-विचार

बातों-बातों में

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई को **वर्ण** कहते हैं।
2. वर्ण दो प्रकार के होते हैं।
3. वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है, जबकि वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
4. क्ष, त्र
5. ये दो हैं– ड़, ढ़।
6. च् + च = बच्चा, न् + न = अन्न।

लिखित में

(क) 1. अयोगवाह कहलाते हैं।
  2. आ, ई, ए, ऐ, ओ तथा औ दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
  3. अंतस्थ व्यंजन।
  4. जो व्यंजन दो या दो से अधिक व्यंजनों के मेल से बनते हैं, उन्हें **संयुक्त व्यंजन** कहते हैं, लेकिन जब कोई स्वर रहित व्यंजन अन्य किसी स्वर सहित व्यंजन के साथ आता है तो उसे **संयुक्ताक्षर** कहते हैं।

5. जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दो गुना समय लगता है, उन्हें **दीर्घ स्वर** कहते हैं; जैसे– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ, जबकि **ह्रस्व स्वर** के उच्चारण में दीर्घ स्वर का आधा समय लगता है; जैसे– अ, इ, उ, ऋ।

(ख) 1. (i) बॉल
2. (iii) प्लुत स्वर
3. (iii) विसर्ग
4. (ii) श् + र् + अ + म् + अ

(ग) 1. (×), 2. (×), 3. (✓), 4. (✓), 5. (×)

(घ) 1. 11, 2. ह्रस्व स्वर, 3. मात्रा, 4. वर्ण-विच्छेद।

(ङ) श् + ऋ + ङ् + ग् + आ + र् + अ (शृंगार)
स् + आ + ग् + अ + र् + अ (सागर)
म् + अ + ह् + अ + र् + षि (महर्षि)
प् + अ + न् + क् + अ + ज् + अ (पंकज)
श् + र् + अ + व् + अ + ण् + अ (श्रवण)
ड् + र् + म् + अ (ड्रम)

➡ सोच-समझ से

1. स्वरों का वर्गीकरण उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर किया गया है।
2. संयुक्त व्यंजन– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

द्वित्व व्यंजन– च् + चा = बच्चा
त् + त = पत्ता
क् + क = पक्का
ड् + ड = लड्डू
न् + न = अन्न

3. सड़क, पढ़ना, बढ़िया, गाड़ी।

➡ कुछ करके देखिए

हंस (एक पक्षी) = हँस (हँसना)
अंग (शरीर का भाग) = अँगना (आँगन)
कंस (एक राजा) = कस (कसना)
रंग (कलर) = (रँग) (रंगना)
बंद (बंद) = बंद (जुड़ा हुआ)
पंख (पंख) = पख (पक्षी)
मंदिर (पूजा स्थल) = मंदर (मंद, धीमा)
भांग (एक पौधा)= भांग (भाग का सेवन)
छंग (शराब) = छँग (छलना, धोखा)
जंग (लड़ाई) = जंग (लौह पर जंग)

मुख्य अंतर– अनुस्वार (ं) अक्सर पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) के स्थान पर आता है, जबकि अनुनासिक (ँ) स्वर के साथ नाक और मुँह से बोली जाने वाली ध्वनि होती है, और यह आमतौर पर चंद्रबिंदु (ँ) के रूप में लिखा जाता है, खासकर जब वर्ण के ऊपर कोई मात्रा न हो।

पँछी गाँव के ऊँचे पेड़ पर बैठकर चूँ-चूँ कर रहे हैं।

पाठ – 3 संधि

➡ बातों-बातों में

1. दो समीपवर्ती वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे **संधि** कहते हैं।
2. स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं।
3. स्वर संधि में केवल स्वरों का मेल होता है।
4. विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं।

➡ लिखित में

(क) 1. उच्चारण के समय कभी-कभी ध्वनियाँ इतनी निकट आ जाती हैं कि वे अलग-अलग न सुनाई देकर अन्य ध्वनि के रूप में सुनाई देती हैं।

वर्णों का यही मेल संधि कहलाता है। जैसे– गण + ईश = गणेश।

2. जब किसी व्यंजन का किसी स्वर अथवा व्यंजन के साथ मेल होने पर उसमें जो परिवर्तन होता है उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं। जैसे–सम् + मान = सम्मान, वि + षम = विषम।
3. यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए तो (ए) 'उ' या 'ऊ' आए तो (अर्) हो जाता है। जैसे– अ + इ = नर + इन्द्र।
4. संधि के तीन भेद होते हैं–

1. **स्वर संधि–**दो स्वरों का आपस में मेल होने पर उसमें जो परिवर्तन होता है, उसे **स्वर संधि** कहते हैं; जैसे– पुस्तक + आलय = पुस्तकालय।
2. **व्यंजन संधि–**जब किसी व्यंजन का किसी स्वर अथवा व्यंजन के साथ मेल होने पर उसमें जो परिवर्तन होता है उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं; जैसे– तत् + लीन = तल्लीन।
3. **विसर्ग संधि– (:)** विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन पर जो परिवर्तन होता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं। जैसे– दु: + जन = दुर्जन।

(ख) 1. (ii) गै + अक
2. (iii) देव्यालय
3. (i) महा + आत्मा
4. (ii) मन: + रंजन
5. (ii) विसर्ग संधि

(ग) 1. विद्या + अर्थी = दीर्घ स्वर संधि
2. हरि + ईश = दीर्घ स्वर संधि
3. सुर + ईश = गुण स्वर संधि
4. पर + उपकार = गुण स्वर संधि
5. मंजु + ऊषा = दीर्घ स्वर संधि
6. सदा + एव = वृद्धि स्वर संधि
7. मातृ + आज्ञा = यण् स्वर संधि
8. गै + अक = अयादि स्वर संधि
9. उत् + लेख = व्यंजन संधि
10. आशी: + वाद = विसर्ग संधि

(घ) 1. (✓), 2. (×), 3. (×), 4. (✓), 5. (×)

(ङ) 1. संधि-विच्छेद
2. व्यंजन-संधि
3. पाँच
4. ध्वनियों

सोच-समझ से

1. छात्र स्वयं करें।
2. गुण संधि। छात्र स्वयं करें।

कुछ करके देखिए

1. छात्र स्वयं करें।
2. छात्र स्वयं करें।

पाठ – 4 शब्द–विचार

बातों-बातों में

1. हम ध्वनियों की ऐसी रचना को शब्द नहीं कह सकते जिसमें कोई निश्चित अर्थ न हो या जो भाषा के ध्वनि-विन्यास के अनुसार न बनी हो।
2. तत्सम शब्द कहलाते हैं।
3. लोटा, जूता।
4. वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं, किंतु विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, **योगरूढ़ शब्द** कहलाते हैं।
5. सार्थक शब्द वे होते हैं जिनका कोई निश्चित और स्पष्ट अर्थ होता है; जैसे–पानी, घर, खाना, जबकि निरर्थक शब्द वे होते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता, या जो बिना अर्थ के ही प्रयोग किए जाते हैं; जैसे–नीपा, बानी, बकवास।

लिखित में

(क) 1. रचना के आधार पर शब्दों के तीन

भेद हैं।

2. वर्णों के सार्थक समूह को **शब्द** कहते हैं; जैसे–सूरज, बतख, कमल।
3. शब्दों को वर्गीकरण के आधार पर चार भागों में बाँटा गया है।
4. वे शब्द जो अनेक सार्थक शब्दों के मेल से बनते हैं, **यौगिक शब्द** कहलाते हैं; जैसे–जलयान = जल + यान, परोपकार = पर + उपकार, जबकि वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं, किंतु विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे–महात्मा = महान + आत्मा अर्थात् महान आत्मा वाला।

(ख) 1. (ii) घी
2. (iii) विदेशी शब्द
3. (i) नीलकंठ
4. (i) एकार्थी

(ग) 1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)

(घ) 1. अनेकार्थी
2. विकारी
3. विकारी
4. तद्भव
5. सार्थक

(ङ)

तत्सम शब्द	**तद्भव शब्द**
जिह्वा	सूरज
कर्म	सात
कंटक	दिन
कोकिल	कुआँ
क्षेत्र	कान
सर्प	पत्ता
अश्रु	गाँव
आम्र	माह

➡ सोच-समझ से

1.

देशज शब्द	**विदेशी शब्द**
लोटा	ट्रेन
खिचड़ी	पुलिस
खिड़की	शर्ट
पगड़ी	बैंक
ठेस	जमीन
जूता	नमक
थैला	सरदार
लुटिया	कुली
गड़बड़ी	दारोगा
चिड़िया	बाल्टी

2.

योगरूढ़ शब्द	**यौगिक शब्द**
नीलकंठ (शिव)	रसोईघर (रसोई+घर)
लंबोदर (गणेश)	पुस्तकालय (पुस्तक + आलय)
पंकज (कमल)	चिड़ियाघर (चिड़िया + घर)
दशानन (रावण)	राजकुमार (राज + कुमार)
जलज (कमल)	राजमहल (राज + महल)

➡ कुछ करके देखिए

1. अखबार
2. स्वाभाविक
3. हिमालय
4. महाभारत
5. औषधालय

पाठ – 5 शब्द-भण्डार

➡ बातों-बातों में

1. एक-दूसरे का विपरीत या उल्टा अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को **विपरीतार्थक** या **विलोम शब्द** कहते हैं।

2. वस्त्र, वसन
3. एक शब्द
4. जो शब्द सुनने में एक समान प्रतीत होते हैं, किन्तु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

लिखित में

(क) 1. जो शब्द लगभग एकसमान अर्थ बतलाते हैं, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
2. एक-दूसरे का उल्टा अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे–गुरु - शिष्य, दिन - रात।
3. अमृत–सुधा, सोम, अमिय, पीयूष। तलवार–खड्ग, कृपाण, असि, करवाल।
4. आचार– व्यवहार।
अचार– खाने का अचार।
चालक– वाहन चलाने वाला।
चालाक– चतुर।
5. वाक्यांशों या अनेक शब्दों के लिए एक शब्द के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। जैसे–जो कम बोलता हो = मितभाषी, जो बोलता न हो = मूक/गूँगा।

(ख) 1. (i) मृग
2. (ii) विराग
3. (iii) चतुर
4. (ii) गृहिणी

(ग) 1. (×), 2. (✓), 3. (×), 4. (×), 5. (✓)

(घ) 1. तुरंग/तरंग
2. अन्न/अन्य
3. पक्का/पका
4. काट/काठ
5. चालक/चालाक

(ङ) 1. जिसकी आने की तिथि ज्ञात न हो।
2. पति-पत्नी का जोड़ा।
3. जिसका आचरण अच्छा हो।
4. थोड़ा-बहुत जानने वाला।
5. जिसका कोई शत्रु न हो।

सोच-समझ से

1. दया : विनम्रता।
2. वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग भाषा को संक्षिप्त, सरल, प्रभावशाली, सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए किया जाता है, जिससे कम शब्दों में पूरे को भाव व्यक्त किया जा सके।

कुछ करके देखिए

बाएँ से दाएँ	ऊपर से नीचे
1. आत्मविश्वास	1. आज्ञाकारी
2. स्वार्थी	2. विद्यार्थी
3. अनुभवी	3. समाजसेवी
4. दैनिक	4. दर्शक
5. ज्ञानी	

पाठ – 6 उपसर्ग, प्रत्यय और समास

बातों-बातों में

1. निर्भय, निडर।
2. पाठक, लेखक।
3. लोहार, सुनार
4. समास के छः भेद हैं।

लिखित में

(क) 1. जिन शब्दांशों को शब्दों के प्रारंभ में जोड़कर शब्द निर्माण किया जाता है, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं। जैसे–अज्ञान, अभिमान।
2. जिन शब्दांशों को शब्दों के अंत में जोड़कर शब्द निर्माण किया जाता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे–मुखिया, दुखिया।
3. कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय में मुख्य अंतर यह है कि कृत् प्रत्यय

क्रिया या धातु के अंत में जुड़कर नये शब्द बनाते हैं, जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में जुड़ते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदंत कहलाते हैं; जैसे– लिख् + अक = लेखक, जबकि तद्धित प्रत्यय से बने शब्द 'तद्धितांत' कहलाते हैं; जैसे– मानव + ता = मानवता।

4. जब दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके नए शब्द की रचना की जाती है तो उस रचना को समास कहते हैं; जैसे–यथासंभव, पंचवटी।
5. कर्मधारय में एक पद विशेषण (या उपमान) और दूसरा विशेष्य (या उपमेय) होता है, जहाँ शब्दार्थ प्रधान होता है; जैसे– नीलकंठ = नीला कंठ, जबकि बहुव्रीहि में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे, अन्य अर्थ की ओर इशारा करते हैं; जैसे– नीलकंठ = शिव, जिसमें तीसरा अर्थ प्रधान होता है, न कि मूल पद।

(ख) 1. (ii) घबराहट
2. (i) पूजा
3. (iii) जादूगर
4. (iii) बहुव्रीहि

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (×), 4. (✓), 5. (×)

(घ) 1. निडर, निधन
2. अत्यधिक, अतिशय
3. अभिनय, अभिलाषा
4. कमजोर, कमअक्ल
5. बिनब्याहा, बिनदेखा
6. उपकार, उपयोग
7. अनबन, अनमोल
8. अवगुण, अवनति

(ङ) 1. दिख + आवा = दिखावा
2. हँस + ओड़ = हँसोड़
3. पढ़ + आई = पढ़ाई
4. भूल + अक्कड़ = भुलक्कड़
5. फूल + दान = फूलदान
6. अच्छा + ई = अच्छाई
7. लोहा + हार = लुहार
8. मोटा + पा = मोटापा
9. चोर + ई = चोरी
10. जार + दारी = जारदारी

(च) 1. करोड़ों का पति (तत्पुरुष समास)
2. पाँच तत्वों का समूह (द्विगु समास)
3. चार भुजाओं का समूह (द्विग समास)
चार भुजाएँ हैं जिसकी (भगवान विष्णु) (बहुव्रीहि समास)
4. दिन और रात (द्वंद्व समास)
5. महान है जो देव (बहुव्रीहि समास)

➡ सोच–समझ से

विज्ञान शब्द में	उपसर्ग (वि)
प्रगति शब्द में	उपसर्ग (प्र)
मानव शब्द में	प्रत्यय (अ)
अत्यधिक शब्द में	उपसर्ग (अति)
सरलता शब्द में	प्रत्यय (ता)
प्रदान शब्द में	उपसर्ग (प्र)
कामों शब्द में	प्रत्यय (ओं)
कुशलता शब्द में	प्रत्यय (ता)
सृजनात्मकता शब्द में	प्रत्यय (आत्मकता)

➡ कुछ करके देखिए

1. त्रिकोण
2. त्रिभुवन
3. लंकापति
4. संसद
5. नमक

6. आजकल
7. महात्मा
8. सत्याग्रह
9. हलधर
10. भवन
11. कमल

पाठ – 7 संज्ञा

➡ बातों-बातों में

1. किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध करने वाले शब्द **संज्ञा** कहलाते हैं।
2. जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत।
3. भाववाचक संज्ञा

➡ लिखित में

(क) 1. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं; जैसे–सिद्धार्थ, हंस, उपवन आदि।

2. **संज्ञा के प्रमुख भेद तीन हैं–** व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।

3. **द्रव्यवाचक संज्ञा–** द्रव्य या विभिन्न धातुओं का बोध करवाने वाले शब्द द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे–लोहा, सोना, चाँदी, घी, तेल, दूध आदि।

समूहवाचक संज्ञा–समूह या समुदाय का बोध करवाने वाले शब्द समूह-वाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे–कक्षा, सेना, भीड़ आदि।

4. **भाववाचक संज्ञा–** भाववाचक संज्ञाओं को देखा और छुआ नहीं जा सकता। इन्हें केवल इन्द्रियों द्वारा अनुभव किया जाता है; जैसे–बचपन, मित्रता आदि।

(ख) 1. (ii) रमेश
2. (iii) नदी
3. (ii) मनुष्यता
4. (ii) तेजी

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (✓), 4. (✓)

(घ) 1. चुनाव 2. सरलता
3. इंसानियत 4. मिलावट
5. अहंकार

(ङ) 1. खटास 7. सफलता
2. सफेदी 8. यौवन
3. सरलता 9. स्वत्व
4. ऊँचाई 10. ममता
5. महानता 11. राष्ट्रीयता
6. गहराई 12. कवित्व

➡ सोच-समझ से

व्यक्तिवाचक	**जातिवाचक**	**भाववाचक**
भारत	कृषि	जीवन
	देश	काम
	जनसंख्या	मेहनत
	हिस्सा	सूर्योदय
	खेती	गर्मी
	किसान	सर्दी
	रात	बरसात
	दिन	कड़ी
	खेतों	मेहनत
	अन्न	
	भारतवासियों	
	पेट	
	बैलों	
	मौसम	
	ऋतुओं	

व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी एक विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान का नाम बताती

है; जैसे–राम, दिल्ली, गंगा, जबकि जातिवाचक संज्ञा किसी पूरी जाति या वर्ग का बोध कराती है; जैसे–लड़का, शहर, नदी, व्यक्तिवाचक एक नाम होता है जबकि जातिवाचक उसका सामान्य वर्ग; व्यक्तिवाचक विशिष्ट होता है और जातिवाचक सामान्य।

कुछ करके देखिए

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	व्यक्तिवाचक संज्ञा
गुलाब के फूल	व्यक्तिवाचक संज्ञा
दलिया	जातिवाचक संज्ञा
इमारत	जातिवाचक संज्ञा
लड़का	जातिवाचक संज्ञा

पाठ – 8 संज्ञा के विकारः लिंग, वचन और कारक

बातों-बातों में

1. लिंग के दो भेद होते हैं– पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।
2. अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों में लिंग जानने में कठिनाई होती है। इनकी पहचान व्याकरणिक होती है। इनका निर्णय प्रयोग के आधार पर ही सम्भव है।
3. 'आँसू' शब्द हमेशा **बहुवचन** होता है, जबकि 'वर्षा' शब्द आमतौर पर **एकवचन** होता है।
4. कारक के आठ भेद होते हैं–1. कर्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. संप्रदान, 5. अपादान, 6. संबंध, 7. अधिकरण, 8. संबोधन।

लिखित में

(क) 1. शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष-जाति का है या स्त्री-जाति का, उसे **लिंग** कहते हैं; जैसे–पुल्लिंग–हिमालय, शेर, राजा आदि। स्त्रीलिंग–खाड़ी, शेरनी, रानी आदि।

2. स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में मुख्य अंतर यह है कि पुल्लिंग पुरुष जाति; जैसे–लड़का, पिता का बोध कराते हैं, जबकि स्त्रीलिंग स्त्री जाति; जैसे–लड़की, माता का बोध कराते हैं।

3. वचन के दो भेद होते हैं–

1. **एकवचन–** एक वस्तु या प्राणी का बोध कराने वाले शब्द **एकवचन** कहलाते हैं; जैसे–चिड़िया, पुस्तक, माला आदि।

2. **बहुवचन–**एक से अधिक वस्तुओं या प्राणियों का बोध कराने वाले शब्द **बहुवचन** कहलाते हैं; जैसे–चिड़ियाँ, पुस्तकें, मालाएँ आदि।

4. सदैव एकवचन में प्रयोग होते हैं–पानी, वर्षा, हवा, दूध आदि।
सदैव बहुवचन में प्रयोग होते हैं–आँसू, हस्ताक्षर, बाल, दर्शन आदि।

5. करण कारक और अपादान कारक दोनों में 'से' विभक्ति का प्रयोग होता है, लेकिन मुख्य अंतर यह है कि करण कारक में 'से' साधन या माध्यम बताता है; जैसे– कलम से लिखता है, जबकि अपादान कारक में 'से' अलग होने, निकलने, डरने या तुलना करने का भाव दर्शाता है; जैसे– पेड़ से फल गिरते हैं।

(ख) 1. (ii) नर मक्खी
2. (ii) भालू
3. (iii) गाय
4. (i) माताएँ
5. (ii) कर्म

(ग) 1. (✕), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)

(घ) 1. लड़की 2. मेढक
3. श्रीमती 4. रूपवान

(ङ) 1. शिक्षिका बच्चे को पढ़ा रही है।
2. मेरे पास एक रुपया है।
3. आकाश में पक्षी उड़ रहा है।
4. चिड़िया दाना चुग रही है।
5. लड़के पुस्तकें पढ़ते हैं।
6. सिपाहियों के पास बंदूकें हैं।
7. कुत्ता भौंक रहा है।

(च) 1. संबोधन कारक
2. कर्ता कारक
3. अधिकरण कारक
4. अपादान कारक
5. करण कारक

सोच-समझ से

1. वह लड़की अपनी सहेली के घर गई।
2. मैं कल दोस्त के साथ बाजार जाऊँगा।
3. क्रोध में मनुष्य की बुद्धि और विवेक नष्ट हो जाते हैं।
4. राम मोहन के साथ खेलने गया।
5. कमरे में मेज पर कुछ पुस्तकें रखकर वह खेलने चला गया।

कुछ करके देखिए

के / के / में / से / में / का / की /से / की / से।

पाठ – 9 सर्वनाम

बातों-बातों में

1. सर्वनाम के छः भेद हैं–1. पुरुषवाचक, 2. निश्चयवाचक, 3. अनिश्चय वाचक, 4. प्रश्नवाचक, 5. संबंधवाचक, 6. निजवाचक।
2. 'हम' तथा 'मैं' उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।
3. प्रश्नवाचक सर्वनाम के दो उदाहरण–
   1. यह पुस्तक <u>किसकी</u> है?
   2. तुम्हारा नाम <u>क्या</u> है?
4. <u>किसी</u> ने बाहर कुर्सी रख दी।

लिखित में

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द **सर्वनाम** कहलाते हैं; जैसे– **वह** अचानक पेड़ से गिर गया।
2. **निश्चयवाचक सर्वनाम** किसी दूर या पास की निश्चित वस्तु, स्थान या व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है; जैसे–वह मोर नाच रहा है, जबकि **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** किसी अनिश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध कराते हैं; जैसे–किसी ने बाहर कुर्सी रख दी।
3. जो सर्वनाम शब्द स्वयं के लिए प्रयुक्त हों, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–आप ही, स्वयं, अपने-आप आदि।
4. 1. आप भ्रमण पर जाया करें।
   2. वे खेल रहे हैं।

(ख) 1. (ii) निजवाचक
2. (iii) कोई
3. (iii) कुछ
4. (i) और (ii) मैं, हम

(ग) 1. (×), 2. (×), 3. (✓), 4. (×), 5. (×)

(घ) 1. कोई 2. किससे
3. स्वयं 4. उसका
5. उसके पास 6. उसकी

7. अपने–आप

(ङ) 1. अपने — निजवाचक सर्वनाम
2. वह — निश्चयवाचक सर्वनाम
अपना — निजवाचक सर्वनाम
स्वयं — निजवाचक सर्वनाम
3. उसके — अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम
4. मेरे — उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम
5. आपके — मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

सोच–समझ से

1. वह कलम से लिखता है।
2. बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
3. मैं बस से स्कूल जाता हूँ।
4. साधुओं की संगति से बुद्धि सुधरती है।
5. माँ ने चाकू से सब्जी काटी।

कुछ करके देखिए

1. मैं अपना काम खुद करता हूँ।
2. हम कल स्कूल जाएँगे।
3. दूध में कुछ गिर गया है।
4. जिसको मेहनत करनी थी, उसको सफलता मिली।
5. जो करेगा, सो भरेगा।
6. इनमें से किन पर भरोसा किया जाए।

पाठ – 10 विशेषण

बातों–बातों में

1. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द **विशेषण** कहलाते हैं।
2. विशेषण चार प्रकार के होते हैं–
   1. गुणवाचक 2. संख्यावाचक
   3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक
3. प्रविशेषण वे शब्द होते हैं जो विशेषण की भी विशेषता बताते हैं, यानी ये बताते हैं कि कोई गुण, मात्रा या संख्या कितनी है; जैसे– बहुत, अत्यंत, थोड़ा, अधिक आदि।
4. कमाऊ।

लिखित में

(क) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। जैसे–लाल गुलाब खिला है।
2. संख्यावाचक विशेषण गिनने योग्य वस्तुओं की संख्या (जैसे–दो, चार, कई) बताता है, जबकि परिमाणवाचक विशेषण नापने–तौलने योग्य वस्तुओं की मात्रा या नाप–तौल (जैसे– थोड़ा, ज्यादा, किलो) बताता है; मुख्य अंतर यह है कि एक 'कितने' का जवाब देता है और दूसरा 'कितना' का।
3. निश्चित संख्यावाचक विशेषण किसी संज्ञा की ठीक संख्या बताते हैं (जैसे– तीन बच्चे), जबकि अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण संख्या का ठीक बोध न कराकर अनुमान बताते हैं (जैसे–कई बच्चे)।
4. **सर्वनाम के रूप में प्रयोग–**
   1. दरवाजे पर कोई खड़ा है।
   2. इसे यहाँ से हटाओ।

   सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयोग–
   1. दरवाजे पर कोई आदमी खड़ा है।
   2. इस बालक को यहाँ से हटाओ।

(ख) 1. (i) केले
2. (i) मुझे पाँच लीटर दूध चाहिए।
(iii) मेरे पास पाँच सौ रुपये हैं।
3. (ii) उसके विद्यालय का नाम सरस्वती विद्या मंदिर है।

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (✓), 4. (✓)

(घ) 1. दो 2. दो किलो
3. कौन–सा 4. मीठे
5. बहुत

सोच–समझ से

1. छात्र स्वयं करें।
2. (i) वह बहुत सुंदर लड़की है।
(ii) मुझे ज्यादा मीठा पसंद नहीं है।
(iii) यह सवाल बिलकुल आसान है।
(iv) वह एकदम सही कह रहा है।
(v) आज मौसम काफी ठंडा है।

कुछ करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ – 11 क्रिया

बातों–बातों में

1. किसी कार्य के करने या होने के बारे में बताने वाले शब्द **क्रिया** कहलाते हैं।
2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–
1. अकर्मक तथा 2. सर्कमक।
3. भूतकाल के छः भेद हैं–
1. सामान्य भूतकाल, 2. आसन्न भूतकाल, 3. पूर्ण भूतकाल, 4. अपूर्ण भूतकाल, 5. संदिग्ध भूतकाल, 6. हेतुहेतुमद भूतकाल।
4. **(i) वर्तमान काल–**
1. विद्यार्थी मैदान में हॉकी खेल रहे हैं।
2. सूर्य पश्चिम में अस्त होता है।
(ii) भूतकाल–
1. बालक मैदान में पतंग उड़ा रहे थे।
2. मैं भ्रमण के लिए गई थी।
(iii) भविष्यत काल–
1. आज हम मैच खेलेंगे।
2. मैं भाई के राखी बाँधूँगी।

लिखित में

(क) 1. क्रिया का जो रूप क्रिया के करने या होने के समय का बोध कराता है, उसे **काल** कहते हैं; जैसे– वे ट्रेन से वापस आए। (भूतकाल)
2. जिन क्रिया शब्दों के साथ कर्म होता है, उन्हें **सकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे–बंदर केला खाता है।
3. क्रिया का मूल रूप **धातु** कहलाता है; जैसे– देख, बोल, पढ़, खा।
4. सकर्मक क्रिया को अपना अर्थ पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता होती है, जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े, जबकि अकर्मक क्रिया को कर्म की जरूरत नहीं होती और क्रिया का प्रभाव केवल कर्ता पर ही रहता है। जैसे–
बच्चा सोता है। (अकर्मक क्रिया)
राम किताब पढ़ता है। (सकर्मक क्रिया)
5. जो क्रिया आने वाले समय में होने का ज्ञान करवाती है, उसे भविष्यत काल कहते हैं। जैसे–मैं भाई के राखी बाँधूँगी।

(ख) 1. (i) अकर्मक।
2. (i) धातु।
3. (ii) भूतकाल का।
4. (iii) वंश भिखारी को भीख देता है।

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (✓), 4. (×), 5. (✓)

(घ) 1. पढ़ना 2. भागना
3. झपकी 4. कूदना
5. सींचा 6. चिल्लाना

(ङ) 1. अपूर्ण वर्तमान काल
2. संभाव्य भविष्यत काल
3. सामान्य वर्तमान काल
4. अपूर्ण वर्तमान काल
5. सामान्य भूतकाल
6. भविष्यत् काल

सोच-समझ से

1. वर्तमान काल (आज, अब) और भविष्यत काल (काल, बहुरि करेगा।)

कुछ करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ – 12 अव्यय

बातों-बातों में

1. ये चार प्रकार के होते हैं–
   1. क्रिया विशेषण
   2. संबंधबोधक
   3. समुच्चय बोधक
   4. विस्मयादिबोधक।
2. क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं–
   1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण
   2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
   3. कालवाचक क्रियाविशेषण
   4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
3. (i) तुम काम करोगे या घर जाओगे।
   (ii) मैं आपकी बात मानूँगा लेकिन तुम्हें पैसे देने होंगे।

लिखित में

(क) 1. जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन, कारक आदि के साथ नहीं बदलते, उनको **अव्यय** या **अविकारी शब्द** कहा जाता है।

2. जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के होने के स्थान का पता चलता है, उन्हें **स्थानवाचक क्रियाविशेषण** कहते हैं। जैसे– केशव नीचे रहता है।
तुम कमरे के **भीतर** रहना।

3. विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं; जैसे–बड़ा घर, सुन्दर फूल, जबकि क्रिया विशेषण क्रिया, विशेषण या किसी अन्य क्रियाविशेषण की विशेषता बताते हैं; जैसे–धीरे चलता है, बहुत सुंदर, जल्दी से भागना।

4. (i) मेहमान अभी आएँगे।
(ii) कोयल कभी-कभी गाती है।
(iii) ऐसी बारिश दो साल बाद हुई है।

5. जो अव्यय आश्चर्य, हर्ष, घृणा, विस्मय आदि मन के भावों को व्यक्त करते हैं, उन्हें **विस्मयादिबोधक** अव्यय कहते हैं; जैसे–
वाह! कितनी सुंदर तितली।
अरे! तुम कब आए?

(ख) 1. ही 2. भर
3. भर 4. ही
5. ही 6. भर

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (✓), 4. (×), 5. (✓)

(घ) 1. (i) अचानक
2. (iii) संबंधबोधक अव्यय
3. (i) विस्मयादिबोधक

(ङ) 1. घृणा, तिरस्कार, अरुचि
2. भय, शोक, आश्चर्य
3. सावधानी, समझदारी, कुशलता
4. हर्ष, प्रशंसा

5. शोक, आश्चर्य, घृणा
6. घृणा, तिरस्कार, तीव्र असंतोष

➡ सोच-समझ से

1. उसने बहुत मेहनत की, परंतु सफल नहीं हो सका।
2. मैं स्कूल नहीं गया क्योंकि मैं बीमार था।
3. उमा अथवा रमा को बुला लो।
4. हमें कड़ी मेहनत करनी चाहिए ताकि हम परीक्षा में सफल हो सकें।
5. यद्यपि वह बहुत बीमार था, तथापि वह स्कूल गया।

➡ कुछ करके देखिए

1. प्रतिदिन	2. पेड़ के ऊपर
3. कल	4. अधिक
5. यहाँ	6. नीचे
7. अंदर	8. खूब
9. बाहर	10. जल्दी-जल्दी

पाठ – 13 वाक्य-विचार

➡ बातों-बातों में

1. वाक्यों के अंगों के नाम–
   1. उद्देश्य और 2. विधेय हैं।
2. वाक्य में प्रयुक्त कर्ता अर्थात् क्रिया को संपन्न करने वाला, **उद्देश्य** होता है।
3. जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उसे **सरल वाक्य** कहा जाता है।
4. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं।

➡ लिखित में

(क) 1. शब्दों के सार्थक तथा व्यवस्थित समूह को वाक्य कहा जाता है; जैसे– उसने मुझे कल पचास रुपये दिए।

2. उद्देश्य वाक्य का वह हिस्सा होता है जिसके बारे में कुछ कहा जाता है (कर्ता), जबकि विधेय वह हिस्सा होता है जो उद्देश्य के बारे में कुछ बताता है (क्रिया और उससे जुड़ी जानकारी)।

3. जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य होता है और एक या अधिक वाक्य (उपवाक्य) उस पर आश्रित होकर जुड़े रहते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहा जाता है। जैसे– नंदिता आएगी तो निर्मला उसके साथ बाहर जाएगी।

4. **इच्छावाचक वाक्य**–जिन वाक्यों में इच्छा, शुभकामना आदि के भाव प्रकट हों, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं, जैसे–
   1. ईश्वर तुम्हें लंबी उम्र दे।
   2. नए साल की हार्दिक शुभकामनाएँ।

   संकेतवाचक वाक्य–जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–1. रात होगी तो आसमान में चाँद निकलेगा। 2. वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

5. (i) शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया।
   (ii) वाह! कितना सुंदर गुलाब है।

(ख) 1. (ii) संयुक्त वाक्य।
2. (i) मैं विद्यालय नहीं जाऊँगा।
3. (i) संदेहवाचक।

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (✓), 4. (✓)

(घ) 1. शब्दों।
2. उद्देश्य।
3. संयुक्त।
4. विधानवाचक।

5. व्याकरणिक।

(ङ) 1. रिया आकर मेरे लिए केले लाई।
2. चिड़िया उड़ गई और वृक्ष पर जा बैठी।
3. सारिका परिश्रमी छात्रा है और उसे पुरस्कार मिला।
4. यह वही लड़का है जो कल पार्क में खेल रहा था।
5. अरे! तुम बाहर जाकर खड़े हो जाओ।

(च)

	उद्देश्य	विधेय
1.	चिड़िया	दाना चुग रही है।
2.	प्रधानाचार्य ने	आज विद्यालय में छुट्टी कर दी।
3.	सभी किसान	खेतों को जोत रहे हैं।
4.	यह ट्रेन	दिल्ली जाएगी।
5.	माँ	कपड़े धो रही हैं।
6.	सूरज	निकल आया है।

➡ सोच-समझ से

अर्थ आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–

विधानवाचक वाक्य–भारत हमारा देश है।

निषेधवाचक वाक्य–मैं घर नहीं जाऊँगा।

प्रश्नवाचक वाक्य–आपका नाम क्या है?

आज्ञार्थक वाक्य–कृपया शांति से बैठ जाइए।

संदेहवाचक वाक्य–शायद आज बारिश होगी।

संकेतवाचक वाक्य–यदि तुम मेहनत करते, तो सफल हो जाते।

इच्छावाचक वाक्य–नववर्ष मंगलमय तुम हो।

विस्मयादिबोधक वाक्य–वाह! क्या सुंदर फूल है।

➡ कुछ करके देखिए

1. मेरा सारा दही फैल गया।
2. पाँच और पाँच मिलकर दस होते हैं।
3. मेले में अनेक दुकानें थीं।
4. वह डिब्बे पर चढ़ गया।
5. वह खाना खाता है।
6. तुम अपने भाई पर ध्यान दो।
7. ज्यादा हवा भरने से गुब्बारा फूट गया।
8. कृपया मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।
9. हनुमान मन और गरुड़ की गति से भी तेज चले।
10. खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।

पाठ – 14 विराम-चिह्न

➡ बातों-बातों में

1. विराम चिह्न भाषा में अर्थ, भाव और ठहराव को स्पष्ट करने का काम करते हैं।
2. विराम-चिह्न अर्थ है–रुकना या ठहरना।

➡ लिखित में

(क) 1. पढ़ते या लिखते समय भाषा के भावों में स्पष्टता लाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।
2. अशुद्ध विराम चिह्नों के प्रयोग से भाषा के अर्थ में भ्रम, अस्पष्टता और अनर्थ हो सकता है, क्योंकि ये चिह्न ठहराव, भाव और विचारों को स्पष्ट करते हैं। इनके गलत इस्तेमाल से वाक्य का मतलब बदल जाता है।
3. किसी वाक्य में छूटे हुए शब्द या अंश के लिए त्रुटिपूरक चिह्न (^) का प्रयोग करते हैं। जैसे–राम ^को हनुमान बहुत प्यारे थे।

(ख) 1. (ii) ?
2. (iii) दो विपरीत शब्दों के मध्य।
3. (i) अरे तुम आ भी गए?

(ग) 1. ! विस्मयादिबोधक चिह्न।
2. ; अर्धविराम।
3. – योजक चिह्न
4. ‘‘ ’’ उद्धरण चिह्न
5. ^ त्रुटिपूरक चिह्न

सोच-समझ से

इकहरा उद्धरण चिह्न–
जैसे–सुभाषचंद्र बोस ‘नेताजी’, प्रेमचंद की कहानी ‘पंच परमेश्वर’
दोहरा उद्धरण चिह्न–
जैसे–लाल बहादुर शास्त्री ने नारा दिया, ‘‘जय जवान, जय किसान’’ सुभाषचंद्र बोस ने कहा था, ‘‘तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।’’

कुछ करके देखिए

छात्र स्वयं करें।

पाठ – 15 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

बातों-बातों में

1. भाषा का विशेष अर्थ प्रकट करने वाले वाक्यांशों को **मुहावरा** कहते हैं।
2. आँखों में धूल झोंकना।
3. वस्तु एक, चाहने वाले अनेक।

लिखित में

(क) 1. जो वाक्यांश सीधे-सीधे अर्थ न बताकर किसी विशेष अर्थ का बोध कराएँ, उन्हें मुहावरा कहते हैं; जैसे– नाक में दम करना।
2. लोक में प्रचलित उक्ति जो लोक अनुभव पर आधारित हो, **लोकोक्ति** कहलाती है।
3. मुहावरे वाक्य के अंश होते हैं जो लाक्षणिक अर्थ देते हैं और वाक्य के अनुसार बदलते हैं; जैसे–नौ दो ग्यारह होना = भाग जाना, जबकि लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण होती हैं; जो लोक अनुभव पर आधारित होती हैं और ज्यों की त्यों प्रयोग होती हैं; जैसे– आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ मिलना।
4. नाच न जाने आँगन टेढ़ा = अपनी योग्यता छिपाने के लिए दूसरों पर दोष लगाना। जैसे– काम खराब हो गया तो कहने लगा, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

(ख) 1. (i) आँखों का तारा होना।
2. (ii) खुशियाँ मनाना।
3. (iii) खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(ग) 1. (✓), 2. (×), 3. (✓), 4. (×)

(घ) 1. जब भाई ने अपनी बहन के साथ अन्याय को देखा, तो आपे से बाहर हो गया और सब पर चिल्लाने लगा।
2. मैं सोहन को सबक सिखाना चाहता हूँ, परन्तु मेरा नाम नहीं आना चाहिए। कुछ ऐसा करो कि साँप मरे न लाठी टूटे।
3. मैं परीक्षा देने आगरा जा रहा हूँ, इस बहाने ताजमहल भी देख लूँगा, इस तरह एक पंथ दो काज हो जायेंगे।
4. अमीरी का दिखावा करने वाले प्राय: ऊँची दुकान, फीके पकवान जैसे होते हैं।
5. पुलिस को देखकर चोर नौ दो ग्यारह हो गए।
6. तीन बार हाईस्कूल फेल शुभम इंटर कालेज के छात्रों को पढ़ाने की बात करने लगा तो सब ने कहा– थोथा चना बाजे घना।

(ङ) 1. (iv), 2. (v), 3. (vi), 4. (ii), 5. (vii), 6. (iii), 7. (i)

सोच-समझ से

शरीर के अंगों से सम्बन्धित पाँच मुहावरे

1. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना (स्वयं अपनी प्रशंसा करना)।
2. आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)।
3. अपने पैरों पर खड़ा होना (स्वावलंबी होना)।
4. उँगली उठाना (दोष लगाना)
5. कलेजा ठंडा होना (संतोष होना)

जीव-जंतुओं से संबंधित पाँच लोकोक्तियाँ

1. अक्ल बड़ी या भैंस (शारीरिक शक्ति की अपेक्षा मानसिक शक्ति ही महत्वपूर्ण)।
2. आ बैल मुझे मार (स्वयं संकट खड़ा करना)।
3. खोदा पहाड़ निकली चुहिया (मेहनत अधिक, फल कम)।
4. साँप मरे न लाठी टूटे (बिना कुछ गँवाए काम का होना)।
5. ऊँट के मुँह में जीरा (आवश्यकता से कम मिलना)।

कुछ करके देखिए

1. गागर में सागर।
2. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।
3. हाथ दिखाना।

पाठ – 16 अपठित गद्यांश

(1) 1. हमारा पर्यावरण शुद्ध और स्वच्छ होना चाहिए।
2. कारखानों तथा वाहनों से निकलने वाला धुआँ पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है।
3. शीर्षक–पर्यावरण प्रदूषण।
4. पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है।
5. हम जिस वातावरण में रहते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं। जिस वातावरण में हम रहते, उसका शुद्ध और स्वच्छ होना जरूरी है। लेकिन हमारा पर्यावरण जैसा होना चाहिए, वैसा नहीं है। इसके कई कारण हैं– 1. बढ़ती हुई जनसंख्या। 2. कारखानों और वाहनों से निकलने वाला धुआँ। हमारे पर्यावरण को अणुशक्ति परीक्षण और वैज्ञानिक प्रयोगों से भी हानि पहुँची है।

(2) 1. भारत में शासन की लोकतंत्र-प्रणाली है।
2. शासन की शक्ति एक हाथ में केन्द्रित, इसलिए नहीं है कि देश में लोकतंत्र प्रणाली है।
3. शीर्षक–शासन की लोकतंत्र प्रणाली।
4. लोकतंत्र शासन प्रणाली में देश के नागरिक अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो उन पर शासन करते हैं।
5. भारत की स्वतंत्रता के साथ ही शासन के लिए लोकतंत्र प्रणाली को चुना गया, जिसमें देश के नागरिक हर पाँचवें वर्ष अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो उन पर शासन करते हैं। लोकतंत्र प्रणाली में ईमानदार तथा योग्य व्यक्तियों को जनसेवा का अवसर मिलता है।

(3) 1. बाजार से सामान लेते समय उस सामान का बिल अवश्य लेना चाहिए।
2. बिल होने से सामान लौटाने में या बदलवाने में सुविधा रहती है।
3. शीर्षक–खरीददारी में समझदारी।

4. बिल लेकर उसका योग जाँच लेना चाहिए।
5. **सारांश**–बाजार से खरीददारी करते समय दुकानदार से बिल अवश्य लेना चाहिए। इसमें मात्रा और मूल्य के साथ योग भी दिया होता है, उसे अवश्य जाँच लेना चाहिए। जैसे–दवा दुकानदार से कोई ऐसी दवा आ जाती है, जिसकी उपयोग अवधि निकल चुकी हो तो बिल दिखाकर बदलवा सकते हैं। हम बिल न होने पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं बना सकते।

(4) 1. वे दोनों अंग्रेज अफसर समझ रहे थे कि ये गेरुए वस्त्र वाला संन्यासी अंग्रेजी नहीं जानता।
2. स्वामीजी ने स्टेशन मास्टर को बुलाकर अंग्रेजी में कहा, ''कृपया थोड़ा पीने का पानी मँगवा दीजिए।''
3. स्वामीजी को अंग्रेजी बोलता देखकर अंग्रेज यात्रियों का सिर शर्म से झुक गया।
4. शीर्षक–ज्ञानी विवेकानंद।
5. स्वामी विवेकानंद की रेल यात्रा के दौरान दो अंग्रेज अफसर भी बैठे हुए थे, जो स्वामीजी के प्रति बुरा बोल रहे थे। वे समझ रहे थे कि संन्यासी अंग्रेजी नहीं जानते। इसी बीच एक स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो स्वामीजी ने स्टेशन मास्टर को बुलाकर अंग्रेजी में कहा, ''कृपया थोड़ा पीने का पानी मँगवा दीजिए।'' स्वामीजी की अंग्रेजी सुनकर अंग्रेज यात्रियों का सिर शर्म से झुक गया। उनमें से एक ने पूछा, ''आप अंग्रेजी जानते हुए अनर्गल बातें सुनकर क्रोधित क्यों नहीं हुए? स्वामीजी ने हँसते हुए कहा, ''मित्रो, आप जैसे व्यक्तियों के सम्पर्क में आने का मेरा यह पहला अवसर नहीं है। नासमझ लोगों पर गुस्सा करके अपनी शक्ति बर्बाद क्यों करूँ।''

अपठित पद्यांश

(1) 1. (iv) 2. (ii) 3. (i)

(2) 1. वृक्ष हमें छाया देते हैं, जो आराम के अच्छे स्थान बन जाते हैं। लोगों को मीठे फल और धरती पर वर्षा करके प्यास बुझाते हैं। वृक्ष शुद्ध वायु के साथ निरोग रखते हैं।
2. वृक्षों से मिलने वाले दो लाभ–(i) शीतल छाया देते हैं। (ii) शुद्ध वायु देकर लोगों को निरोग रखते हैं।
3. शीर्षक–परोपकारी वृक्ष/वृक्षों का महत्व।
4. कवि हमसे कहता है कि वृक्ष परोपकारी पादप है। इससे हमें पीने को पानी और खाने को मीठे फल मिलते हैं। वर्षा को आमंत्रण देकर धरती की प्यास बुझाते हैं। वृक्ष का हर अंग हमारे काम आता है यानि कि वृक्ष हमारे मित्र हैं। इन्हें नहीं काटना चाहिए।

(3) 1. प्रलय से मिट्टी हार नहीं मानती।
2. चक्रवर्ती सम्राटों और जग को जीतने वाले लोगों को मिट्टी जन्म देती है।
3. कवि ने मिट्टी को नश्वर कहा है।
4. शीर्षक– मिट्टी के रूप।

पाठ – 17 पत्र–लेखन

1. अपने दोस्त को नैनीताल घूमने जाने के संबंध में पत्र

प्रेषक का पताः
123, गाँधी नगर
आगरा–282005
दिनांकः 12 अप्रैल, 20––
प्रिय मित्र सुरेश,
सप्रेम नमस्कार!

आशा करता हूँ कि तुम और तुम्हारे परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। यह पत्र मैं तुम्हें अपने मन की योजना बताने के लिए लिख रहा हूँ।

इन गर्मियों की छुट्टियों में हमारे परिवार ने नैनीताल घूमने जाने का कार्यक्रम बनाया है। तुम तो जानते ही हो कि नैनीताल 'झीलों का शहर' कहलाता है और वहाँ का सौन्दर्य देखते ही बनता है। मैं सोच रहा था कि क्यों न इस यात्रा को और भी यादगार बनाया जाए। मैं चाहता हूँ कि तुम भी हमारे साथ चलो। हम नैनीताल की झील पर नौका विहार करेंगे, पहाड़ियों पर ट्रैकिंग करेंगे और नैना देवी के दर्शन कर धार्मिक यात्रा भी सिद्ध कर देंगे। तुम्हारे साथ से यह यात्रा और भी मजेदार हो जाएगी।

मेरे माता–पिता ने भी तुम्हें आमंत्रित किया है। वे तुम्हें बहुत पसंद करते हैं। यदि तुम्हारे माता–पिता अनुमति दें, तो कृपया मुझे जल्द ही बताना। हम जून के पहले सप्ताह में जाने का विचार कर रहे हैं।

अपनी सहमति का उत्तर शीघ्र देना। आपके जवाब की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा प्रिय मित्र
अजेय

प्राप्तकर्ता का पता
सुजान शर्मा
256, ग्रीन सिटी
लखनऊ, उत्तरप्रदेश–226001

2. अपने मामाजी को कक्षा में प्रथम आने की जानकारी के संबंध में पत्र

प्रेषक का पताः
साक्षी शर्मा
102, गायत्री अपार्टमेंट
यमुना पार, मथुरा (उत्तरप्रदेश)
पिनकोड–281001
दिनांकः 10 अप्रैल, 20––
सेवा में
श्रीमान् मामाजी
45, गाँधी मार्ग
लखनऊ, उत्तर प्रदेश–226001
आदरणीय मामाजी,
सादर प्रणाम!

आशा करती हूँ कि आप और मामीजी सकुशल होंगे। मैं यह पत्र आपको अपनी एक खुशखबरी बताने के लिए भेज रही हूँ।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस वर्ष मैंने अपनी कक्षा–6 की वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मुझे कुल 95 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। मेरे विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने मुझे मेडल और प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया है। माताजी और पिताजी बहुत खुश हैं।

मैं यह सफलता आपके आशीर्वाद और मेरे अध्यापकों के मार्गदर्शन का परिणाम मानती हूँ। आपकी प्रेरणा से मैंने नियमित अध्ययन किया और इसके बाद यह उपलब्धि प्राप्त हुई।

आपसे अनुरोध है कि जब भी समय मिले, हमारे यहाँ अवश्य पधारें ताकि मैं आपको अपना प्रमाण-पत्र दिखा सकूँ।

आपकी भांजी

साक्षी

3. प्रधानाचार्य जी को बस बदलने के लिए प्रार्थना-पत्र

सेवा में

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,

सरस्वती विहार, दिल्ली।

विषय–विद्यालय बस बदलने हेतु प्रार्थना-पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा-6 का छात्र हूँ। मेरा नाम आलोक शर्मा है और मैं विद्यालय की बस संख्या 5 से आता-जाता हूँ।

पिछले कुछ दिनों से यह बस लगातार देरी से आ रही है और कई बार तकनीकी समस्याओं के कारण रास्ते में ही रुक जाती है। इसके अलावा बस में पर्याप्त सीटें नहीं हैं, जिससे छात्रों को खड़े होकर यात्रा करनी पड़ती है, जो सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं है।

अत: मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि हमारे मार्ग की बस बदलकर कोई नई और अच्छी स्थिति वाली बस की व्यवस्था करने की कृपा करें, ताकि हम सभी छात्र सुरक्षित और समय पर विद्यालय पहुँच सकें

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

आलोक शर्मा

कक्षा-6 'अ'

अनुक्रमांक-15

दिनांक: 12 अप्रैल, 20--

4. प्रेषक:

अर्जुन सिंह

कक्षा-6 बी

शिव निकेतन आवासीय विद्यालय

रानीखेड़ा, उत्तराखंड

दिनांक: 15 अप्रैल, 20--

सेवा में,

प्रबंधक महोदय

स्पोर्ट्स वर्ल्ड

मुख्य बाजार, हल्द्वानी

विषय– खेल सामग्री मँगवाने हेतु पत्र।

महोदय,

हमारे विद्यालय की ओर से आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष हमारे विद्यालय में वार्षिक खेल-प्रतियोगिता का आयोजन होना है। इसके लिए हमें कुछ खेल सामग्री की आवश्यकता है।

आपसे निवेदन है कि निम्नलिखित सामग्री हमें शीघ्र उपलब्ध करवाने की कृपा करें।

1. क्रिकेट बैट-5 नग

2. टेनिस बॉल-1 दर्जन

3 फुटबॉल-4 नग

4. वॉलीबॉल नेट-2 नग

5. बैडमिंटन रैकेट-6 नग

6. खेल जूते (साइज 4-6)- 10 जोड़ी

कृपया सामग्री की गुणवत्ता अच्छी रखें और बिल के साथ विद्यालय के पते पर भेज दें। भुगतान डिलीवरी के बाद विद्यालय कार्यालय द्वारा किया जाएगा।

आशा है आप शीघ्र सामग्री भेजकर सहयोग प्रदान करेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

अर्जुन सिंह
(विद्यालय की ओर से)

5. सेवा में,
संपादक महोदय,
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक हिन्दुस्तान
दिल्ली कार्यालय, दिल्ली।

विषय– बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों के बारे में।

महोदय,

मैं आपके समाचार पत्र के माध्यम से स्थानीय बिजली विभाग व प्रशासन का ध्यान अपने क्षेत्र में बिजली संकट की गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ।

हमारे रामनगर कॉलोनी, वार्ड नंबर 7 में पिछले एक महीने से बिजली की भारी कमी हो रही है। प्रतिदिन 8 से 10 घंटे बिजली गुल रहती है। इसके कारण निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है–

- छात्रों को रात में पढ़ाई में बाधा आ रही है।
- गर्मी के दिनों में पंखे/कूलर न चलने से बुजुर्गों व बच्चों को स्वास्थ्य समस्याएँ हो रही हैं।
- पानी की मोटर न चलने से पानी की किल्लत हो गई है।
- घरों में रखा खाना खराब हो जाता है।

इतनी लंबी कटौती से लगता है कि बिजली विभाग कोई पूर्व योजना के बिना कटौती कर रहा है। आपके समाचार पत्र के माध्यम से हम निवेदन करते हैं कि इस समस्या पर तुरंत ध्यान दिया जाए और बिजली आपूर्ति नियमित की जाए।

आशा है कि आप इस जनहित के मुद्दे को अपने अखबार में स्थान देंगे।

धन्यवाद सहित,
भवदीया
नीतू शर्मा
रामनगर कॉलोनी, वार्ड नं. 7
दिनांक: 15 अप्रैल, 20--

6. सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
सरस्वती विद्या मंदिर,
विकास नगर, दिल्ली।

विषय: बीमारी के कारण अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा 6 'ब' का छात्र हूँ। मेरा नाम अंशुल वर्मा है और मेरा अनुक्रमांक 12 है।

पिछले दो दिनों से मुझे तेज बुखार एवं खाँसी-जुकाम होने के कारण चिकित्सक ने मुझे पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी है। डॉक्टर के अनुसार मुझे इस स्थिति में कम से कम तीन दिन तक आराम करना आवश्यक है।

अत: मैं आपसे विनम्र अनुरोध करता हूँ कि मुझे दिनांक 16 अप्रैल 20-- से 18 अप्रैल 20-- तक (तीन दिन) का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं स्वस्थ होने के बाद अपनी पढ़ाई का नुकसान पूरा करने का पूरा प्रयास करूँगा। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद सहित,
आपका आज्ञाकारी शिष्य
अंशुल वर्मा
कक्षा-6 'ब'
अनुक्रमांक 12
दिनांक: 15 अप्रैल, 20--

पाठ – 18 संवाद लेखन

1. अजय और विजय सुबह स्कूल के मैदान में मिलते हैं।

अजय – नमस्ते विजय आज सुबह से ही किताब में नाक घुसाए दिख रहे हो।

विजय – अरे, नमस्ते अजय! हाँ यार, अगले हफ्ते से तो वार्षिक परीक्षाएँ शुरू हो रही हैं। अभी से कुछ पढ़ लूँ, तो आखिरी दिनों में रट्टा नहीं मारना पड़ेगा।

अजय – सही कह रहे हो। मैंने भी एक टाइम-टेबल बना लिया है। सुबह गणित और विज्ञान की तैयारी करता हूँ, क्योंकि तब दिमाग ताजा रहता है।

विजय – वाह! अच्छा विचार है। मैं तो अभी तक पुराने प्रश्नपत्र हल कर रहा हूँ। इससे पैटर्न और महत्वपूर्ण प्रश्न समझ में आ जाते हैं।

अजय – हाँ, यह भी जरूरी है। क्या तुमने सामाजिक विज्ञान के नक्शे और तिथियाँ याद कर ली हैं? मुझे तो वही कठिन लगते हैं।

विजय – उनके लिए मैं चार्ट बना रहा हूँ, और दीवार पर चिपका दिया है। रोज देखने से याद हो जाता है। तुम भी ऐसा करो।

अजय – धन्यवाद, यह टिप अच्छी है। एक बात और तुम्हारी हिंदी निबंध की तैयारी कैसी चल रही है?

विजय – मैं हर दिन एक नया विषय चुनकर उस पर दो पेज लिखने का अभ्यास कर रहा हूँ। शिक्षिका ने कहा था कि अभ्यास से ही लेखन शैली सुधरती है।

अजय – सच कहा। ठीक है, तो फिर चलो, आज से हम दोनों एक-दूसरे को कठिन सवाल पूछकर तैयारी करेंगे। टीम वर्क से काम आसान हो जाएगा।

विजय – बिल्कुल! शाम को पार्क में मिलते हैं और एक घंटा रिवीजन करते हैं।

अजय – ठीक है, तब तक के लिए अलविदा! पढ़ाई जारी रखो।

विजय – अलविदा अजय! मेहनत करते रहो।

(दोनों अपनी-अपनी कक्षा की ओर चले जाते हैं।)

संवाद का सार: यह संवाद दो मित्रों के बीच परीक्षा की तैयारी के तरीकों, समय प्रबंधन, विषय वार रणनीति और सहयोगात्मक अध्ययन पर केन्द्रित है।

2. मोहन और रामनाथ दो पड़ोसी शाम को बगीचे में बैठे बात कर रहे हैं।

मोहन – रामनाथ जी, आज अखबार में कश्मीर में फिर एक आतंकवादी हमले की खबर पढ़ी। दिल दहल गया, कितने निर्दोष लोग मारे गए।

रामनाथ – सच कहा मोहन जी, यह आतंकवाद एक कोढ़ बन गया है। ऐसी घटनाएँ न केवल जानलेवा हैं बल्कि पूरे समाज में भय और अशांति फैलाती हैं।

मोहन – बिल्कुल सही। इन आतंकवादियों का मकसद तो सिर्फ डर फैलाना और देश की शांति भंग करना होता है। आम लोग, महिलाएँ, बच्चे... किसी को नहीं बख्शा जाता।

रामनाथ – सबसे दुखद यह है कि इसकी जड़ में युवाओं को गुमराह किया जाता है। गरीबी, बेरोजगारी और गलत शिक्षा के कारण कुछ युवा गलत रास्ते पर चले जाते हैं।

मोहन – आपने ठीक कहा। हमारी सरकार को चाहिए कि वह न सिर्फ सख्त सुरक्षा उपाय करे, बल्कि युवाओं के लिए रोजगार और सही मार्गदर्शन की व्यवस्था भी करे। साथ ही, आम जनता को भी सतर्क रहना होगा।

रामनाथ – बिल्कुल। हमें अपने बच्चों को मानवता, देशभक्ति और शांति का पाठ पढ़ाना होगा। ताकि वे कभी भटके नहीं। और समाज के तौर पर हमें किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को देनी चाहिए।

मोहन – सही बात है। देश की सुरक्षा हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। उम्मीद करते हैं कि शासन-प्रशासन और जनता मिलकर इस समस्या से जल्द निपट लेंगे।

रामनाथ – हाँ, प्रार्थना करते हैं कि ऐसी घटनाएँ दोबारा न हों और देश में सद्भाव बना रहे। चलिए, अब चलते हैं।

मोहन – जी, नमस्ते।

(दोनों अपने-अपने घर की ओर चले जाते हैं।)

संवाद का सार–यह संवाद आतंकवाद के दुष्प्रभावों, इसके कारणों, और इसे रोकने के लिए सरकार और समाज की भूमिका पर केन्द्रित है। इसमें आम नागरिकों की चिंता, सतर्कता और सामूहिक जिम्मेदारी का भाव प्रकट हुआ है।

3. नीलम और अर्जुन स्कूल से लौटते हुए अपनी कॉलोनी की गली में चल रहे हैं।

नीलम – अरे अर्जुन, देखो तो! कल ही तो सफाई अभियान हुआ था, और आज फिर गली के कोने में कूड़ा जमा हो गया है।

अर्जुन – सच कह रही हो नीलम। लोग सफाई करते हैं, लेकिन सफाई बनाए रखने की आदत नहीं डालते। देखो, वहाँ दुकानदार ने कचरा सीधे सड़क पर फेंक दिया है।

नीलम – यही तो समस्या है। हम सब अपने घर के अंदर तो साफ-सुथरा रखते हैं, लेकिन बाहर गली-मोहल्ले की सफाई को कोई नहीं सोचता। क्या हम कुछ नहीं कर सकते?

अर्जुन – कर सकते हैं! पहले तो हमें खुद अपने घर का कूड़ा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए। दूसरे, हम अपने पड़ोसियों को भी समझा सकते हैं।

नीलम – एक और विचार है। हम कॉलोनी के बच्चों को इकट्ठा करके एक ''स्वच्छता दल'' बना सकते हैं। हर शनिवार को हम सब मिलकर गली की सफाई करेंगे।

अर्जुन – बढ़िया सुझाव है! और सफाई के साथ-साथ हम लोगों को जागरूक भी करेंगे। चलो कुछ पोस्टर भी बनाते हैं–''स्वच्छ रखें अपना परिवेश'', ''कूड़ा है तो कूड़ेदान में डालें''।

नीलम – हाँ, अरे हम सबसे अनुरोध करेंगे कि वे अपने घर के सामने वाले हिस्से की स्वच्छता खुद बनाए रखें। छोटे-छोटे प्रयास बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

अर्जुन – ठीक कहा। तो क्या हम कल से ही शुरुआत करें? मैं अपने दोस्तों को बताता हूँ, तुम भी तैयारी कर लो।

नीलम – जरूर! स्वच्छता हमारा अधिकार है और कर्तव्य भी। चलो, हम इसकी शुरुआत अपने आसपास से ही करते हैं।

अर्जुन – बिल्कुल! तो कल सुबह 8 बजे पार्क में मिलते हैं और योजना बनाते हैं।

नीलम – ठीक है। अभी के लिए अलविदा!

(दोनों अपने-अपने घर की ओर प्रसन्नता से चल पड़ते हैं।)

संवाद का सार–यह संवाद सामुदायिक स्वच्छता के प्रति जागरूकता, व्यक्तिगत जिम्मेदारी और सामूहिक प्रयास की महत्ता को दर्शाता है।

4. रामकिशोर और राजेश अपनी-अपनी कारों में ट्रैफिक जाम में फँसे हुए हैं। खिड़की से बातचीत करते हुए।

रामकिशोर – अरे भाई राजेश! ये ट्रैफिक का क्या हाल है, आधा घंटा हो गया, पर हिले तो नहीं!

राजेश – अरे रामकिशोर जी, अब तो रोज का यही नजारा है। पहले कभी सड़कें खाली रहती थीं, अब तो चलना मुश्किल हो गया है।

रामकिशोर – सही कह रहे हैं। गाड़ियाँ इतनी बढ़ गई हैं कि हर छोटे शहर में भी जाम लगने लगा है। हर परिवार में दो-तीन वाहन तो आम बात हो गई है।

राजेश – और सबसे बड़ी बात–पब्लिक ट्रांसपोर्ट की हालत दयनीय है। अगर बस और मेट्रो सुविधाजनक और समय पर होतीं, तो शायद इतनी निजी गाड़ियाँ सड़क पर न होतीं।

रामकिशोर – वाहन बढ़ने से प्रदूषण भी बहुत बढ़ गया है। सुबह-सुबह धुँध और धुएँ का गुबार साफ दिखता है।

राजेश – जी हाँ, और दुर्घटनाएँ भी बढ़ी हैं। कई बार तो लोग ट्रैफिक नियम तोड़कर जान जोखिम में डाल देते हैं। हेलमेट और सीट बेल्ट का इस्तेमाल भी लोग कम करते हैं।

रामकिशोर – सरकार को चाहिए कि सख्त नियम बनाए और पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बेहतर बनाए। साथ ही लोगों को भी समझना होगा– जरूरत के हिसाब से ही गाड़ी खरीदें, एक परिवार में कई वाहन लेना जरूरी नहीं है।

राजेश – और कारपूलिंग को भी बढ़ावा देना चाहिए। अगर एक ही रास्ते पर जाने वाले चार लोग एक कार में चलें, तो चार गाड़ियाँ कम होंगी।

रामकिशोर – बिल्कुल सही! हमें भी कोशिश करनी चाहिए कि छोटी दूरी के लिए पैदल चलें या साइकिल का इस्तेमाल करें।

राजेश – अच्छा विचार है। देखो, ट्रैफिक थोड़ा हिलने लगा है। चलो, आगे बढ़ते हैं। बात करके अच्छा लगा।

रामकिशोर – हाँ, ध्यान रखना, सुरक्षित चलाना। नमस्ते!

(दोनों अपनी–अपनी कार आगे बढ़ाते हैं।)

संवाद का सार–यह संवाद बढ़ते वाहनों से उत्पन्न समस्याएँ जैसे यातायात जाम, प्रदूषण, दुर्घटनाएँ और सार्वजनिक परिवहन की कमी पर चर्चा करता है, तथा इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयास, जागरूकता और सरकारी कार्यवाही की आवश्यकता पर बल देता है।

5. प्रिया और आद्या स्कूल की छत पर बारिश के पानी को एकत्र करने वाली टंकी देख रही हैं।

प्रिया – देखो आद्या, यह टंकी इसलिए लगी है ताकि बारिश का पानी बर्बाद न हो और हम सफाई या बगीचे में उपयोग कर सकें।

आद्या – हाँ प्रिया, बहुत अच्छा प्रयास है। पर सोचो, अगर हर घर और हर स्कूल में ऐसी व्यवस्था हो तो कितना पानी बच सकता है।

प्रिया – बिल्कुल! आजकल तो पानी की कमी एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है। गाँवों में तो और भी गंभीर हालात हैं– महिलाओं को मीलों दूर से पानी भरकर लाना पड़ता है।

आद्या – सही कहा। हम शहर में रहकर भी पानी को बर्बाद कर देते हैं। नहाते समय शावर चलाकर रखना, नल खुला छोड़ देना, कार धोते समय पाइप का इस्तेमाल– इन सबसे पानी व्यर्थ बह जाता है।

प्रिया – हमें सबको जागरूक करना चाहिए। मेरी दादी कहती हैं कि पहले लोग कुएँ और बावड़ियों का पानी इस्तेमाल करते थे और बहुत संभालकर। आज हमारे पास सुविधा है तो लापरवाही बढ़ गई है।

आद्या – एक काम कर सकते हैं– हम कक्षा में एक ''जल बचाओ'' प्रोजेक्ट शुरू करें। चार्ट, नारे, और छोटे नुक्कड़ नाटक से लोगों को समझा सकते हैं। घर-घर जाकर लोगों को टपकते नल ठीक करवाने या रेनवाटर हार्वेस्टिंग के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

प्रिया – बढ़िया विचार है! हम अपने घर से भी शुरुआत करें। मैंने घर में वाशिंग मशीन का इस्तेमाल कम कर दिया है और कपड़े हाथ से धोती हूँ, जिससे पानी कम लगता है।

आद्या – मैंने तो माँ के साथ मिलकर किचन के ''ग्रे वाटर'' को पौधों में डालने का सिस्टम

लगवाया है। साबुन वाला पानी भी अगर कम मात्रा में हो तो पौधों के लिए हानिकारक नहीं होता।

प्रिया – वाह! यह तो बहुत अच्छा तरीका है। हम यह जानकारी सबको बाँट सकते हैं। सचमुच, जल ही जीवन है– इसे बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

आद्या – ठीक कहा। तो कल से हम अपने स्कूल में एक छोटी टीम बनाते हैं और जल संरक्षण पर काम शुरू करते हैं। पहले प्रधानाचार्या मैडम से अनुमति ले लेते हैं।

प्रिया – ठीक है आद्या! आज से ही हम दोनों पानी की हर बूँद को बचाने का प्रण लेते हैं।

आद्या – बिल्कुल! चलो, अब नीचे चलते हैं और कक्षा में दोस्तों से भी यह विचार साझा करते हैं।

(दोनों मुस्कुराते हुए सीढ़ियों से उतरती हैं, जल संरक्षण के प्रति एक नई ऊर्जा और संकल्प के साथ।)

संवाद का सार–यह संवाद जल संरक्षण की आवश्यकता, रोजमर्रा के जीवन में पानी बचाने के व्यावहारिक उपायों, तथा छात्राओं द्वारा समाज में जागरूकता फैलाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

6. सोनम और नेहा स्कूल की लाइब्रेरी के बाहर बैठी हैं, और एक-दूसरे के पहनावे पर चर्चा कर रही हैं।

सोनम – अरे नेहा, तुमने ये प्रिंटेड कुर्ती और डेनिम जींस कॉम्बिनेशन कितना स्टाइलिश पहना है! आजकल तो यही ट्रेंड है न?

नेहा – हाँ सोनम, बस आरामदायक और फैशनेबल दोनों होना चाहिए। पर देखो तुमने भी तो सूती सलवार-कमीज पहनी है– सादगी भी कितनी खूबसूरत लगती है।

सोनम – सच कहा। मैं ज्यादातर सूती या हैंडलूम कपड़े पहनना पसंद करती हूँ। सस्ते, आरामदायक और गर्मी में ठंडक देते हैं। पर आजकल तो बाजार में पश्चिमी कपड़ों की भरमार है।

नेहा – हाँ जींस, टॉप्स, टी-शर्ट्स, स्कर्ट्स ... सब मिल रहा है। हमारी पीढ़ी में फ्यूजन पहनावा बहुत पॉपुलर है– जैसे कुर्ती के साथ जींस या सलवार के साथ फैशनेबल टॉप।

सोनम – मगर कभी-कभी मुझे लगता है कि हमारे पारंपरिक पहनावे जैसे– साड़ी, लहँगा-चोली भी तो बहुत खूबसूरत होते हैं। उन्हें भी हमें प्रमोट करना चाहिए।

नेहा – बिल्कुल! त्योहारों या खास मौकों पर तो हम सब पारंपरिक ड्रेस में ही दिखते हैं। असली बात यह है कि हम अपने कल्चर से जुड़े रहें, पर मॉडर्न फैशन को भी अपनाएँ। बस, कपड़े ऐसे हों जो सुविधाजनक और मौसम के अनुकूल हों।

सोनम – और एक बात– स्कूल-कॉलेज में यूनिफॉर्म ही ठीक है। उससे एकता का भाव आता है और पहनावे को लेकर की जाने वाली प्रतिस्पर्धा भी नहीं होती।

नेहा – सही बात है। हाँ एक ट्रेंड तो अब सस्टेनेबल फैशन का भी

आ गया है– ऐसे कपड़े जो इको-फ्रेंडली हों, रिसाइकल या हैंडमेड हों। हमें वह भी सपोर्ट करना चाहिए।

सोनम – हाँ, वो तो बहुत अच्छी बात है। चलो, हम यह प्रण करें कि हम फैशन के साथ-साथ अपनी संस्कृति और पर्यावरण का भी ध्यान रखेंगे।

नेहा – बिल्कुल सहमत! अरे देखो, बेल बज गई। अब हमें क्लास में चलना चाहिए।

सोनम – चलो! तुम्हारा कॉम्बिनेशन वाकई काफी अच्छा है– मैं भी कल ऐसा ही कुछ ट्राई करूँगी।

नेहा – (मुस्कुराते हुए) जरूर! तुम्हारी सलवार-कमीज भी बहुत सुंदर है। चलो, अब चलते हैं।

(दोनों किताबें समेटकर क्लास की ओर चल देती हैं।)

संवाद का सार–यह संवाद आज के पहनावे में पारंपरिक और आधुनिक फैशन के समन्वय, आराम व उपयुक्तता के महत्व तथा सस्टेनेबल व सांस्कृतिक रूप से जुड़े फैशन के प्रति जागरूकता पर केन्द्रित है।

पाठ – 19 कहानी लेखन

(क) (i) **बिल्ली और बंदर**

एक जंगल में दो बिल्लियाँ रहती थीं। एक दिन उन्हें एक रोटी का टुकड़ा मिला। दोनों बिल्लियाँ रोटी पर अपना-अपना हक जताने लगीं और आपस में झगड़ने लगीं। कोई भी बिल्ली रोटी छोड़ने को तैयार नहीं थी।

उनका झगड़ा देखकर वहाँ एक चालाक बंदर आ गया। उसने कहा कि वह इस विवाद का न्याय करेगा। बंदर ने तराजू निकाला और रोटी को दो भागों में बाँटकर तोलने लगा। एक पलड़ा भारी होता तो वह उस हिस्से को कुतर लेता और दूसरे को बराबर करने की कोशिश करता।

बार-बार ऐसा करते-करते बंदर रोटी का अधिकांश भाग खा गया। अंत में रोटी बहुत छोटी रह गई। बंदर ने वह बची हुई रोटी भी खा ली और बोला कि अब न्याय हो गया है।

दोनों बिल्लियाँ पछताने लगीं, क्योंकि आपसी झगड़े के कारण उन्हें कुछ भी नहीं मिला।

शिक्षा–

आपसी झगड़े में तीसरे का लाभ होता है। मिल-जुलकर रहने से ही फायदा होता है।

(ii) **कौआ और घड़ा**

एक दिन बहुत तेज गर्मी थी। एक कौआ प्यास के कारण बहुत व्याकुल था। वह पानी की खोज में इधर-उधर उड़ता रहा, लेकिन उसे कहीं भी पानी नहीं मिला। थोड़ी देर बाद उसे एक घर के पास मिट्टी का घड़ा दिखाई दिया। कौआ तुरंत घड़े के पास पहुँचा और अंदर झाँका। घड़े में थोड़ा पानी था, पर वह बहुत नीचे था। कौए ने चोंच डालकर पानी पीने की कोशिश की, पर सफल नहीं हुआ। उसने हार नहीं मानी और पास पड़े कंकड़ उठाकर एक-एक करके घड़े में डालने लगा। कंकड़ डालने से पानी ऊपर आ गया। कौए ने आराम से पानी पिया और उड़ गया।

शिक्षा–बुद्धि और धैर्य से हर समस्या हल हो सकती है।

(ख) **संकेतों के आधार पर कहानी**

(i) **जमींदार और उसका पिता**

एक गाँव में एक अमीर जमींदार रहता था। उसके पास धन–दौलत की कोई कमी नहीं थी, फिर वह अपने बूढ़े पिता से अच्छा व्यवहार नहीं करता था। वह उन्हें ठीक से खाने–पहनने को नहीं देता था। सर्दी के मौसम में जब पिता ने टाट माँगा, तो जमींदार ने गुस्से में टाट को फाड़ने का आदेश दिया। जमींदार का छोटा बेटा टाट को दो टुकड़ों में काट लाया। एक टुकड़ा उसने दादा को दिया और दूसरा अपने पास रख लिया। जब जमींदार ने पूछा, तो बेटे ने कहा कि जब आप बूढ़े होंगे, तब यह टुकड़ा आपके काम आएगा। यह सुनकर जमींदार को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने पिता से माफी माँगी।

शिक्षा–माता–पिता का सम्मान करना चाहिए।

(ii) **लालची कुत्ता**

एक कुत्ता बहुत लालची था। वह रोज मांस की दुकान पर जाता और मौका मिलते ही मांस का टुकड़ा चुरा लेता था। एक दिन वह मांस का बड़ा टुकड़ा लेकर भागा। दुकानदार ने उसे चोरी करते देख लिया और उसके पीछे दौड़ पड़ा। डर के मारे कुत्ता भागता हुआ नदी के किनारे पहुँचा। नदी के पानी में उसने अपनी परछाईं देखी। उसे लगा कि यह कोई दूसरा कुत्ता है, जिसके मुँह में भी मांस का टुकड़ा है। अधिक मांस पाने के लालच में वह भौंकने लगा। भौंकते ही उसके मुँह से मांस का टुकड़ा पानी में गिर गया और बह गया। कुत्ता भूखा रह गया और पछताने लगा।

शिक्षा– लालच बुरी बला है।

(ग) (i) **पशु प्रेमी चिंटू**

चिंटू एक दयालु और संवेदनशील बालक था। उसे पशु–पक्षियों से बहुत प्रेम था। वह रोज सुबह पक्षियों के लिए दाना और पानी रखता था। एक दिन उसने सड़क पर एक घायल कुत्ते को देखा। चिंटू ने उसे उठाया और पास के पशु चिकित्सक के पास ले गया। उसने कुत्ते की देखभाल की और उसे भोजन दिया। धीरे–धीरे कुत्ता ठीक हो गया। गाँव के लोग चिंटू की दया और करुणा की बहुत प्रशंसा करने लगे। चिंटू ने सभी को सिखाया कि पशु–पक्षी भी हमारी तरह जीवित प्राणी हैं और उन्हें प्रेम तथा सहानुभूति की आवश्यकता होती है।

शिक्षा–हमें पशु–पक्षियों के प्रति दया–भाव रखना चाहिए।

(ii) **कपटी मित्र**

रमेश का एक मित्र था जो बहुत मीठी बातें करता था। वह दिखावे में बहुत अच्छा लगता था, लेकिन अंदर से कपटी था। वह हमेशा अपने स्वार्थ के बारे में सोचता था। एक दिन उसने रमेश का भरोसा जीतकर उससे पैसे उधार ले लिए और फिर लौटाने से मना कर दिया। तब रमेश को समझ आया कि उसका मित्र धोखेबाज है। उसे बहुत दुख हुआ कि उसने बिना पूरी पहचान के उस पर भरोसा किया। इस घटना से रमेश ने सीख ली कि हर मीठा बोलने वाला व्यक्ति सच्चा मित्र नहीं होता। मित्रता करने से पहले व्यक्ति के स्वभाव और व्यवहार को अच्छे से समझना चाहिए।

शिक्षा–पूरा परिचय पाए बिना मित्रता नहीं करनी चाहिए।

पाठ – 20 अनुच्छेद-लेखन

1. प्रातः भ्रमण

प्रातः भ्रमण हमारे जीवन के लिए अत्यंत लाभदायक है। सुबह का वातावरण स्वच्छ, शांत और प्रदूषण–रहित होता है। इस समय की गई सैर से शरीर को ताजी हवा और पर्याप्त ऑक्सीजन मिलती है, जिससे फेफड़े मजबूत होते हैं। प्रातः भ्रमण करने से शरीर स्वस्थ रहता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसके साथ–साथ मन भी प्रसन्न और शांत रहता है। सुबह की हरियाली, पक्षियों की चहचहाहट और उगता हुआ सूर्य मन को आनंद से भर देता है। नियमित प्रातः भ्रमण करने से आलस्य दूर होता है और दिनभर काम करने की ऊर्जा मिलती है। यह हमें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देता है। इसलिए सभी को प्रतिदिन सुबह सैर करनी चाहिए।

2. वर्षा ऋतु का पहला दिन

वर्षा ऋतु का पहला दिन सभी के लिए बहुत सुखद होता है। भीषण गर्मी के बाद जब वर्षा की पहली बूँदें धरती पर गिरती हैं, तो सभी को राहत मिलती है। खेत–खलिहान, पेड़-पौधे और वातावरण हरा–भरा हो जाता है। ठंडी हवा चलने लगती है और चारों ओर मिट्टी की सोंधी खुशबू फैल जाती है। बच्चे वर्षा में भीगकर खेलते हैं और किसान खुशी से झूम उठते हैं क्योंकि उनकी फसलों को जीवन मिलता है। नदियाँ और तालाब भरने लगते हैं। वर्षा का पहला दिन तन–मन को प्रसन्नता से भर देता है और प्रकृति का सुंदर दृश्य देखने को मिलता है।

3. समय का सदुपयोग

समय जीवन का सबसे मूल्यवान धन है। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करता है, वही जीवन में सफल होता है। बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता, इसलिए हर क्षण का सही उपयोग करना चाहिए। समय पर पढ़ाई करने से ज्ञान बढ़ता है और आत्मविश्वास भी मिलता है। जो लोग समय बर्बाद करते हैं, वे अक्सर पछताते हैं। समय का सदुपयोग हमें अनुशासन, मेहनत और जिम्मेदारी सिखाता है। समय पर किया गया कार्य तनाव को कम करता है और सफलता के मार्ग खोलता है। विद्यार्थियों के लिए समय का सही उपयोग बहुत आवश्यक है। हमें अपने समय को अच्छे कार्यों में लगाना चाहिए ताकि हमारा भविष्य उज्ज्वल बन सके।

4. मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना

मजहब हमें आपस में बैर रखना नहीं सिखाता, बल्कि प्रेम, भाईचारे और सद्भाव का संदेश देता है। सभी धर्म मानवता, दया और सत्य की शिक्षा देते हैं। धर्म के नाम पर लड़ाई–झगड़े करना गलत है। हमें एक–दूसरे के धर्म और विचारों का सम्मान करना चाहिए। भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग मिल–जुलकर रहते हैं। आपसी प्रेम और सहिष्णुता से समाज में शांति बनी रहती है। जब हम एक–दूसरे की सहायता करते हैं, तब मानवता जीवित रहती है। इसलिए हमें धर्म के नाम पर भेदभाव नहीं करना चाहिए और सभी को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

5. महँगाई की मार

आज महँगाई एक बड़ी समस्या बन गई है। रोजमर्रा की वस्तुएँ जैसे दाल, चावल, सब्जी और तेल बहुत महँगे हो गए हैं।

इसका सबसे अधिक प्रभाव गरीब और मध्यम वर्ग पर पड़ता है। सीमित आय में परिवार चलाना कठिन हो गया है। महँगाई के कारण लोगों को अपनी आवश्यकताओं में कटौती करनी पड़ती है। बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर भी इसका असर पड़ता है। महँगाई से आम आदमी का जीवन तनावपूर्ण हो गया है। सरकार को चाहिए कि वह महँगाई पर नियंत्रण करे और आवश्यक वस्तुओं के दाम कम करे, ताकि जनता को राहत मिल सके।

6. देशप्रेम

देशप्रेम का अर्थ अपने देश से सच्चा प्रेम और सम्मान करना है। एक देशभक्त नागरिक देश के नियमों का पालन करता है और उसके विकास में योगदान देता है। हमें अपने देश की संस्कृति, भाषा और परंपराओं पर गर्व होना चाहिए। देश के सैनिक सीमा पर रहकर हमारी रक्षा करते हैं, हमें उनके बलिदान को याद रखना चाहिए। देशप्रेम केवल भाषण देने से नहीं, बल्कि ईमानदारी, मेहनत और कर्तव्य निभाने से दिखता है। हमें स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए और समाज में अच्छे कार्य करने चाहिए। सच्चा देशप्रेम हमें एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

पाठ – 21 निबंध लेखन

1. परिश्रम–सफलता की सीढ़ी

रूपरेखा– • परिश्रम का अर्थ • जीवन में महत्व • परिश्रम और सफलता • विद्यार्थी जीवन • उपसंहार।

- **परिश्रम का अर्थ–**परिश्रम का अर्थ है–कठिन परिश्रम, लगन और निरंतर प्रयास। यह किसी लक्ष्य को पाने के लिए पूरी निष्ठा और ऊर्जा के साथ किया गया कार्य है। जीवन में कोई भी सफलता बिना मेहनत के नहीं मिलती। बिना परिश्रम के ना तो ज्ञान मिलता है और ना ही कोई व्यक्ति आगे बढ़ सकता है। परिश्रम ही वह साधन है, जो मनुष्य को लक्ष्य तक पहुँचाता है। जो व्यक्ति मेहनत से डरता नहीं, वही आगे बढ़ता है।
- **जीवन में महत्व–**जीवन के हर क्षेत्र में परिश्रम का विशेष महत्व है। क्योंकि यह सफलता की कुंजी है, जो हमें लक्ष्य प्राप्त करने, आत्मविश्वास बढ़ाने, चरित्र निर्माण करने और अनुशासित रहने में मदद करता है, बगैर परिश्रम के न तो समाज में सम्मान मिलता है, ना ही हम अपनी प्रगति के द्वार खोल सकते हैं। किसान खेतों में दिन–रात मेहनत करता है, तभी हमें अन्न मिलता है। मजदूर, शिक्षक, डॉक्टर और खिलाड़ी सभी परिश्रम से ही सफलता प्राप्त करते हैं। बिना परिश्रम के केवल सपने देखने से कुछ नहीं मिलता।
- **परिश्रम और सफलता–** परिश्रम (कड़ी मेहनत) और सफलता का गहरा और सीधा संबंध है; परिश्रम सफलता की कुंजी है क्योंकि यह लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है, चरित्र का निर्माण करता है और भाग्य पर निर्भर रहने के बजाय कर्म पर जोर देता है, जिससे व्यक्ति अपनी इच्छा शक्ति और लगन से सपनों को साकार कर सकता है।

परिश्रम और सफलता का चोली–दामन का संबंध है। जो व्यक्ति धैर्य और ईमानदारी से प्रयास करता है, उसे देर–सवेर सफलता अवश्य मिलती है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ कठिन परिश्रम ने असंभव को संभव बना दिया।

- **विद्यार्थी जीवन**–विद्यार्थी जीवन में परिश्रम का महत्व सबसे अधिक है। नियमित अध्ययन, अभ्यास और समय का सही उपयोग करने वाला विद्यार्थी अवश्य सफल होता है। इसके विपरीत आलस्य विद्यार्थी का सबसे बड़ा शत्रु है।
- **उपसंहार**– अत: हमें परिश्रम को अपना मित्र बनाना चाहिए। सच ही कहा गया है–''परिश्रम सफलता की सच्ची सीढ़ी है।''

2. जीवन में खेलों का महत्व

रूपरेखा– • खेलों का परिचय •शारीरिक लाभ • मानसिक लाभ • नैतिक गुण • उपसंहार।

- **खेलों का परिचय**– ''पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होओगे खराब'' यह कहावत आज निराधार हो गई है। माँ–बाप आज जान गए हैं कि बच्चों के मानसिक विकास के साथ शारीरिक विकास भी होना चाहिए। खेल जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। खेल न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि हमारे शारीरिक और मानसिक विकास में भी सहायक होते हैं। प्राचीन काल से ही खेलों को शिक्षा का आवश्यक भाग माना गया है।
- **शारीरिक लाभ**– खेलों से शरीर स्वस्थ और मजबूत बनता है। जो बच्चे पढ़ने के साथ-साथ खेलों में भाग लेते हैं वे चुस्त और आलस्य रहित होते हैं। उनकी हड्डियाँ मजबूत और चेहरा कान्तिमय होता है। नियमित खेलकूद से मांसपेशियाँ विकसित होती हैं, पाचन शक्ति ठीक रहती है, नेत्रों की ज्योति बढ़ जाती है और रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। खेल व्यक्ति को चुस्त–दुरुस्त रखते हैं और मोटापे से बचाते हैं।
- **मानसिक लाभ**–मानसिक विकास में भी खेलों का विशेष योगदान है। खेल तनाव को कम करते हैं आत्म–विश्वास बढ़ाते हैं, एकाग्रता सुधारते हैं और सामाजिक–भावनात्मक कौशल विकसित करते हैं, जिससे व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना कर पाता है और उसका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है और मन को प्रसन्न रखते हैं। खेल खेलने से आत्मविश्वास, एकाग्रता और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।
- **नैतिक गुण**–खेल हमें अनेक नैतिक गुण भी सिखाते हैं। अनुशासन, सहयोग, टीम भावना, नेतृत्व, ईमानदारी, निष्पक्षता, धैर्य और प्रतिद्वंद्वी के प्रति सम्मान जैसे नैतिक गुणों का विकास होता है, क्योंकि खिलाड़ी नियमों का पालन करना, मिलकर काम करना और हार–जीत को गरिमा से स्वीकार करना सीखते हैं, जिससे उनका चरित्र मजबूत होता है और जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी इन मूल्यों को अपनाते हैं। ये सभी गुण खेलों से विकसित होते हैं।
- **उपसंहार**–खेल केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक स्वस्थ और सफल जीवन जीने का एक अभिन्न अंग है, जो हमें शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाते हैं और जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि खेल जीवन को संतुलित और आनंदमय बनाते हैं। स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन के लिए खेलों को जीवन में अवश्य स्थान देना चाहिए।

3. भारतीय किसान

रूपरेखा– • किसान का परिचय • किसान का जीवन • किसान का परिश्रम • समाज में महत्व • किसानों की समस्याएँ • उपसंहार।

- **किसान का परिचय**–भारतीय किसान भारत की कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, जो देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं और लगभग 70 प्रतिशत आबादी के लिए आजीविका प्रदान करते हैं, फसल उगाने, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन जैसे विभिन्न कृषि संबंधी व्यवस्थाओं में संलग्न हैं। वह खेतों में कठिन परिश्रम करता है और अन्न उगाकर सभी के जीवन को सहेजता है। उसका जीवन साधारण और मेहनत से भरा होता है। वह सुबह जल्दी उठकर हल चलाता है, बीज बोता है, सिंचाई करता है और फसल की देखभाल करता है।
- **किसान का जीवन**–भारतीय किसान का जीवन प्रकृति से जुड़ा, मेहनत भरा और संघर्षों से भरा होता है, जो सुबह जल्दी उठकर खेतों की जुताई, बुवाई, सिंचाई और कटाई करता है, मौसम और मिट्टी पर निर्भर रहता है। आर्थिक चुनौतियों (कर्ज, उचित दाम न मिलना) का सामना करता है, लेकिन सादगी, संतोष और परंपराओं के साथ जीवन जीता है, और देश खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने वाला "अन्नदाता" कहलाता है। लेकिन मौसम, सूखा, बाढ़ और आर्थिक समस्याएँ उसकी परेशानियाँ बढ़ाती हैं। इसके बावजूद वह लगातार मेहनत करता है, क्योंकि उसके परिश्रम से ही पूरे समाज को भोजन मिलता है।
- **किसान का परिश्रम**–किसान भारतीय समाज के सबसे महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक है। वह व्यावहारिक रूप से लोगों को भोजन प्रदान करता है। किसान वह होता है जो खेत का मालिक होता है और उसका संचालन करता है। कुछ किसान कई तरह की फसलें उगाते हैं, जबकि अन्य दुधारू गायें पालते हैं और उनका दूध बेचते हैं।
- **समाज में महत्व**–समाज में किसान का महत्व बहुत बड़ा है। वह केवल अपने परिवार के लिए नहीं बल्कि पूरे देश के लिए अन्न उगाता है। इसलिए उसे "अन्नदाता" कहा जाता है। किसानों का सम्मान और सहायता करना हम सभी का कर्तव्य है। क्योंकि किसान ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं, अनाज, दालें, मसाले और सब्जियाँ उगाते हैं यानि कि किसान देश को भोजन उपलब्ध कराते हैं और उद्योग के लिए कच्चा माल देते हैं।
- **किसानों की समस्याएँ**–किसानों की प्रमुख समस्याओं में अच्छी फसल का उचित मूल्य न मिलना, सिंचाई की कमी, घटिया बीज, मिट्टी का खराब होना (क्षरण), कर्ज का बोझ, भंडारण और परिवहन की सुविधाओं का अभाव और मौसम पर अत्यधिक निर्भरता शामिल हैं, जो उनकी आय को प्रभावित करते हैं और उन्हें गरीबी की ओर धकेलते हैं।
- **उपसंहार**–आज किसान कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं। उचित मूल्य न मिलने, कर्ज, प्राकृतिक आपदाओं और तकनीकी कमी के कारण किसान दुखी रहता है। हमें उनके जीवन की कठिनाइयों को समझकर उनकी मदद करनी चाहिए। अत: किसान केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि समाज का आधार है। उनका सम्मान करना और उनकी समस्याओं का समाधान करना हमारा कर्तव्य है।

4. मेरी प्रिय पुस्तक

रूपरेखा–• पुस्तक का नाम और लेखक • पुस्तक का परिचय • पुस्तक से प्राप्त शिक्षा • पुस्तक का महत्व • उपसंहार।

- **पुस्तक का नाम और लेखक**–मेरी प्रिय पुस्तक है 'सिंहासन बत्तीसी'', जिसे पौराणिक कथाओं के रूप में लिखा गया है। यह पुस्तक मुझे बचपन से ही बहुत पसंद है। इसमें राजा विक्रमादित्य के न्याय और बुद्धिमत्ता की कहानियाँ हैं।
- **पुस्तक का परिचय**–पुस्तक में प्रत्येक कहानी में राजा की समझदारी और निर्णय लेने की क्षमता दिखाई गई है। कहानी पढ़ते समय मन में रोमांच और सीख दोनों का अनुभव होता है। हर कहानी कुछ न कुछ शिक्षा देती है। उदाहरण के लिए, सच्चाई और ईमानदारी के महत्व को यह पुस्तक स्पष्ट रूप से बताती है।
- **पुस्तक से प्राप्त शिक्षा**–यह पुस्तक केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि हमें जीवन में नैतिकता और मूल्य सिखाती है। इसके माध्यम से हम सीखते हैं कि जीवन में हमेशा सत्य, न्याय और परिश्रम का मार्ग अपनाना चाहिए।
- **पुस्तक का महत्व**–पुस्तक पढ़ने से मेरा ज्ञान बढ़ा है और सोचने-समझने की क्षमता विकसित हुई है। यह मुझे प्रेरित करती है कि जीवन में कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लिया जाए।
- **उपसंहार**–अत: मेरी प्रिय पुस्तक केवल कहानी संग्रह नहीं, बल्कि जीवन जीने की सीख देती है। इसे पढ़कर मन को आनंद मिलता है और ज्ञान का भंडार भी बढ़ता है।

5. राष्ट्रीय पर्व

रूपरेखा–• राष्ट्रीय पर्व का अर्थ और महत्व • प्रमुख राष्ट्रीय पर्व: स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और गाँधी जयंती • मनाने का उद्देश्य: देशभक्ति की भावना और एकता का संदेश • राष्ट्रीय पर्व और समाज: बच्चों और बुजुर्गों की भूमिका • उपसंहार: राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य।

- **प्रमुख राष्ट्रीय पर्व–**भारत विविधताओं का देश है, जहाँ अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। इनमें 'राष्ट्रीय पर्व' का स्थान सबसे ऊपर है क्योंकि ये किसी धर्म या जाति के न होकर पूरे राष्ट्र के होते हैं। भारत में मुख्य रूप से तीन राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं– 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस), 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) और 2 अक्टूबर (गाँधी जयंती)।
- **मनाने का उद्देश्य**–ये पर्व हमें उन वीर शहीदों की याद दिलाते हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया। स्वतंत्रता दिवस पर हम अपनी आजादी का उत्सव मनाते हैं। वहीं गणतंत्र दिवस हमारे संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। गाँधी जयंती हमें सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।
- **राष्ट्रीय पर्व और समाज**–इन अवसरों पर स्कूलों और सरकारी कार्यालयों में तिरंगा फहराया जाता है। बुजुर्ग महिलाएँ अक्सर बच्चों को इन वीर गाथाओं की कहानियाँ सुनाती हैं, जिससे नई पीढ़ी में संस्कार और प्रेम जागृत होता है। गलियों और मैदानों में लड़कों का समूह उत्साह के साथ प्रभात फेरी निकालता है और देशभक्ति के गीत गाता है। ये दृश्य समाज में एकता और भाईचारे का संचार करते हैं।
- **उपसंहार**–राष्ट्रीय पर्व हमें याद दिलाते हैं कि हम सबसे पहले भारतीय हैं। यह केवल छुट्टी मनाने का दिन नहीं है, बल्कि देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का दिन है। हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने देश की प्रगति में योगदान देंगे और इसकी अखंडता को बनाए रखेंगे।

जब बच्चे और युवा इन पर्वों के महत्व को समझेंगे, तभी हमारा देश विश्व गुरु बन पाएगा।

6. व्यायाम का महत्व

रूपरेखा– • प्रस्तावना– स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास • व्यायाम के प्रकार– योग, टहलना, खेलकूद और कसरत • व्यायाम के लाभ– रोगों से बचाव और स्फूर्ति, तनाव से मुक्ति और एकाग्रता • उपसंहार–जीवन में अनुशासन और नियमितता का महत्व।

- **प्रस्तावना**–कहा गया है कि "पहला सुख निरोगी काया", अर्थात् स्वस्थ शरीर ही जीवन का सबसे बड़ा धन है। इस धन को प्राप्त करने का सबसे सरल और प्रभावी साधन 'व्यायाम' है। नियमित रूप से किया गया शारीरिक श्रम ही व्यायाम कहलाता है। आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी और मशीनी युग में व्यायाम की आवश्यकता और भी बढ़ गई है।
- **व्यायाम के प्रकार**–व्यायाम के कई रूप हो सकते हैं। सुबह की सैर, योगासन, तैराकी, जिम जाना या कोई भी खेल खेलना व्यायाम के अंतर्गत आता है। जब हम व्यायाम करते हैं, तो हमारे शरीर में रक्त का संचार तेजी से होता है और फेफड़ों को शुद्ध हवा मिलती है। इससे न केवल हमारा पाचन तंत्र ठीक रहता है, बल्कि मोटापे और हृदय रोग जैसी समस्याओं से भी बचाव होता है।
- **व्यायाम के लाभ**–व्यायाम का प्रभाव केवल शरीर पर ही नहीं, बल्कि मस्तिष्क पर भी पड़ता है। नियमित व्यायाम से तनाव कम होता है और मन प्रसन्न रहता है। लड़कों का समूह यदि मैदान में फुटबॉल या क्रिकेट खेलता है, तो उनमें न केवल शारीरिक शक्ति बढ़ती है, बल्कि टीम वर्क और अनुशासन की भावना भी विकसित होती है। वहीं, बुजुर्ग महिलाएँ यदि सुबह योग और प्राणायाम करती हैं, तो उन्हें बुढ़ापे में होने वाले जोड़ों के दर्द और मानसिक थकान से राहत मिलती है।
- **उपसंहार**–विद्यार्थियों के लिए व्यायाम अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह उनकी एकाग्रता और याददाश्त बढ़ाने में मदद करता है। हमें यह समझना चाहिए कि व्यायाम कोई एक दिन का कार्य नहीं, बल्कि एक अच्छी आदत है। अंत में, हम कह सकते हैं कि यदि हम लंबी आयु और खुशहाल जीवन चाहते हैं, तो हमें व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा अवश्य बनाना चाहिए।

7. मेरे सपनों का भारत

रूपरेखा– • प्रस्तावना– भारत की गौरवशाली परंपरा और वर्तमान स्थिति • शिक्षा और तकनीक– शत-प्रतिशत साक्षरता और डिजिटल प्रगति • सामाजिक समानता– जातिवाद और भेदभाव से मुक्त समाज • आर्थिक संपन्नता–गरीबी मुक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र • उपसंहार–नए भारत के निर्माण में हमारा संकल्प।

- **प्रस्तावना**–भारत एक ऐसा प्राचीन राष्ट्र है जिसकी गोद में महान सभ्यताएँ फली-फूली हैं। 'मेरे सपनों का भारत' एक ऐसा देश है, जहाँ ज्ञान का प्रकाश हर घर तक पहुँचे और गरीबी का अंधेरा पूरी तरह मिट जाए। मैं एक ऐसे भारत की कल्पना करता हूँ जहाँ हर हाथ को काम मिले और कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।
- **शिक्षा और तकनीकी**–मेरे सपनों के भारत में विज्ञान और संस्कार साथ-साथ चलेंगे। जहाँ एक तरफ हम अंतरिक्ष की ऊँचाइयों

को छुएँगे, वहीं दूसरी तरफ अपनी जड़ों और संस्कृति को भी संजोकर रखेंगे। इसमें लड़कों का समूह केवल तकनीकी शिक्षा ही नहीं, बल्कि नैतिकता और सम्मान का पाठ भी सीखेगा। समाज में बुजुर्ग महिलाओं को वह सर्वोच्च स्थान और सम्मान प्राप्त होगा, जिसकी वे हकदार हैं। मेरा सपना है कि भारत की बेटियाँ रात के अंधेरे में भी खुद को सुरक्षित महसूस करें।

- **सामाजिक समानता**–इस भारत में ऊँच-नीच, जाति-पाँति और धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं होगा। लोग एक-दूसरे की खुशियों और दुखों में शामिल होंगे। पर्यावरण की रक्षा हमारी प्राथमिकता होगी, जहाँ नदियाँ स्वच्छ होंगी और चारों ओर हरियाली होगी। भ्रष्टाचार और प्रदूषण से मुक्त यह राष्ट्र पूरी दुनिया के लिए 'विश्व गुरु' की भूमिका निभाएगा।
- **आर्थिक संपन्नता**–भारत का लक्ष्य है कि देश के हर नागरिक को गरीबी से बाहर निकालना और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना, इसके लिए सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' जैसी पहल शुरू की हैं, जो स्थानीय उद्योगों, रोजगार सृजन और कृषि जैसे क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देकर देश को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने पर केन्द्रित है, साथ ही पंचायती राज के माध्यम से ग्रामीण विकास और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जुड़कर लोगों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है।
- **उपसंहार**–मेरे सपनों का भारत केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि चारित्रिक रूप से भी समृद्ध होगा। यहाँ के नागरिक अनुशासित होंगे और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखेंगे। जब हम सब मिलकर ईमानदारी से प्रयास करेंगे, तभी मेरा यह सपना हकीकत में बदलेगा और भारत पुनः सोने की चिड़िया कहलाएगा।

8. आतंकवाद के बढ़ते कदम

रूपरेखा– • प्रस्तावना– आतंकवाद का अर्थ और यह एक वैश्विक समस्या • आतंकवाद के कारण– कट्टरता, बेरोजगारी और राजनीतिक स्वार्थ • दुष्प्रभाव– जन-धन की हानि और भय का वातावरण • रोकथाम के उपाय–अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शिक्षा का प्रसार • उपसंहार– शांति और मानवता की रक्षा का संकल्प।

- **प्रस्तावना**– एक प्रकार की हिंसात्मक गतिविधि होती है। अगर कोई व्यक्ति या कोई संगठन अपने आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति के लिए देश या देश के नागरिकों की सुरक्षा को निशाना बनाए, तो आतंकवाद कहते हैं। आतंकवाद वर्तमान विश्व की सबसे भयावह और जटिल समस्या बन चुका है। यह एक ऐसी मानसिकता है जो भय, हिंसा और अराजकता के माध्यम से अपने अनुचित लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहती है। आज आतंकवाद के बढ़ते कदम किसी एक देश तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसने पूरी मानवता को खतरे में डाल दिया है। आए दिन निर्दोष लोगों की हत्याएँ और सार्वजनिक संपत्तियों का विनाश इसकी क्रूरता का प्रमाण है।
- **आतंकवाद के कारण**–आतंकवाद के पनपने के पीछे कई कारण हैं, जिनमें धार्मिक कट्टरता, अशिक्षा, बेरोजगारी और कुछ देशों द्वारा दी जाने वाली राजनीतिक शरण प्रमुख हैं। जब युवाओं को सही दिशा और रोजगार नहीं मिलता, तो वे आसानी से भ्रमित होकर हिंसा के रास्ते पर निकल पड़ते हैं। लड़कों का समूह जो देश की

शक्ति बन सकता है, यदि वह शिक्षा और नैतिकता से दूर हो जाए, तो समाज के लिए चिंता का विषय बन जाता है।

- **दुष्प्रभाव**–आतंकवाद के दुष्परिणाम व्यापक और विनाशकारी होते हैं, जिनमें जान-माल की भारी क्षति, आर्थिक विकास में बाधा, सामाजिक विश्वास में कमी, मानवाधिकारों का हनन और लोगों में भय व असुरक्षा की भावना पैदा करना शामिल है। आतंकवाद का सबसे बुरा प्रभाव विकास की गति पर पड़ता है। जिस धन का उपयोग शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए होना चाहिए, वह सुरक्षा और हथियारों पर खर्च हो रहा है। बुजुर्ग महिलाएँ और मासूम बच्चे इसके सबसे बड़े शिकार होते हैं, जो अपनों को खोने का दर्द सहते हैं। यह समाज में अविश्वास की खाई पैदा करता है।
- **रोकथाम के उपाय**–आतंकवाद समस्या के समाधान के लिए केवल सैन्य शक्ति काफी नहीं है। हमें वैश्विक स्तर पर एकजुट होना होगा और आतंकवादियों के वित्तपोषण (फंडिंग) को रोकना होगा। शिक्षा का प्रसार और युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ना अनिवार्य है।
- **उपसंहार**–आतंकवाद सिर्फ एक हिंसक कृत्य नहीं, बल्कि एक ऐसी महामारी है जो समाज के हर पहलू को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है, जिससे व्यापक पीड़ा, अस्थिरता और भय का वातावरण बनाता है। जब तक विश्व का हर नागरिक शांति और भाईचारे का संकल्प नहीं लेगा, तब तक आतंकवाद के इन बढ़ते कदमों को रोकना संभव नहीं होगा। मानवता की रक्षा ही हमारा परम धर्म होना चाहिए।

9. प्रदूषण एक समस्या

रूपरेखा– • प्रस्तावना– प्रदूषण का अर्थ और वर्तमान परिदृश्य • प्रदूषण के प्रकार– वायु, जल, ध्वनि और मृदा प्रदूषण • कारण– औद्योगीकरण, शहरीकरण और मानवीय लापरवाही • दुष्प्रभाव–स्वास्थ्य पर असर, पर्यावरण का बिगड़ना • उपाय और उपसंहार– व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास।

- **प्रस्तावना**–आज के आधुनिक युग में जहाँ मानव ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है, वहीं 'प्रदूषण' के रूप में एक विकराल समस्या भी खड़ी कर दी है। प्रदूषण का अर्थ है, पर्यावरण में ऐसे हानिकारक तत्वों का मिल जाना जो जीवन और प्रकृति के लिए घातक हों। यह एक ऐसी वैश्विक चुनौती है जो न केवल हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, बल्कि पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को भी बिगाड़ रही है।
- **प्रदूषण के प्रकार**–प्रदूषण कई प्रकार का होता है– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण। उद्योगों से निकलने वाला धुआँ, वाहनों का बढ़ता प्रयोग और पेड़ों की कटाई वायु प्रदूषण के मुख्य कारण हैं। नदियों और झीलों में कचरा और रासायनिक अपशिष्ट बहाने से जल प्रदूषण होता है। डीजे का शोर, वाहनों के हॉर्न ध्वनि प्रदूषण बढ़ाते हैं, जबकि खेतों में अत्यधिक रसायनों का प्रयोग मृदा प्रदूषण का कारक बनता है।
- **कारण**–कारखानों से निकलने वाले सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और ग्रीन हाउस गैसें हवा को जहरीला बनाती हैं, वहीं उद्योगों से निकलने वाले अनुपचारित अपशिष्ट जल और ठोस कचरे नदियों, झीलों और मिट्टी को दूषित करते हैं। उद्योगों के लिए वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों का

अंधाधुँध उपयोग पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है। मानवीय लापरवाही के रूप में हम कह सकते हैं कि लोगों का ध्यान प्रदूषण के दुष्प्रभावों और इसे रोकने के उपायों के बारे में जागरूकता की कमी है।

- **दुष्प्रभाव**–इस सभी प्रकार के प्रदूषण का सीधा असर हमारे जीवन पर पड़ता है। प्रदूषित हवा से साँस संबंधी बीमारियाँ, प्रदूषित पानी से पेट की बीमारियाँ और ध्वनि प्रदूषण से तनाव तथा बहरापन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। पर्यावरण में बदलाव के कारण कभी अत्यधिक गर्मी तो कभी अत्यधिक बारिश जैसी चरम घटनाएँ देखने को मिल रही हैं।
- **उपसंहार**–प्रदूषण की समस्या किसी एक देश या समाज की नहीं, बल्कि पूरी मानवता की समस्या है। इसके समाधान के लिए केवल सरकारों या उद्योगों को ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली अपनाना ही इस अभिशाप से मुक्ति का मार्ग है। हमें 'प्रदूषण मुक्त ग्रह' की दिशा में मिलकर काम करना होगा, ताकि प्रकृति और मानव का सह-अस्तित्व सुरक्षित रह सके।

10. अंतरिक्ष की सैर

रूपरेखा– • प्रस्तावना– अंतरिक्ष के प्रति मनुष्य की जिज्ञासा • तैयारी और अनुभव– रॉकेट की उड़ान और भारहीनता का अहसास • अंतरिक्ष से पृथ्वी का दृश्य– एक अद्भुत और सुंदर नजारा • वैज्ञानिक महत्व –नए ग्रहों और रहस्यों की खोज • उपसंहार– भविष्य की संभावनाएँ और रोमांच।

- **प्रस्तावना**–अंतरिक्ष एक अद्‌वितीय स्थान है जिसमें हमारी पृथ्वी और अनगिनत ग्रह-तारे समाहित हैं। अनंत आकाश में टिमटिमाते तारों को देखकर हर किसी के मन में यह सवाल उठता है कि वहाँ की दुनिया कैसी होगी? 'अंतरिक्ष की सैर' करना केवल वैज्ञानिकों का सपना नहीं, बल्कि हर जिज्ञासु मन की कल्पना है। अंतरिक्ष के विशाल खगोल विज्ञान के संदर्भ में हमें नए और अद्भुत ज्ञान की प्राप्ति की इच्छा होती है।
- **तैयारी और अनुभव–** आज विज्ञान ने इतनी उन्नति कर ली है कि मनुष्य चंद्रमा तक जा पहुँचा है और अब मंगल ग्रह पर बसने की तैयारी कर रहा है। अंतरिक्ष यात्रा में रॉकेट की उड़ान के दौरान अंतरिक्ष यात्री को सीट पर जबरदस्त दबाव महसूस होता है, जो उन्हें सीट में धकेलता है, लेकिन एक बार रॉकेट के अलग होने और कक्षा में पहुँचने पर वे भारहीनता का अनुभव करते हैं क्योंकि वे लगातार पृथ्वी के चारों ओर गिर रहे होते हैं, जिसे मुक्त पतन कहते हैं, जिससे वे अंतरक्षि यान में तैरने लगते हैं और उन्हें लगता है जैसे कोई गुरुत्वाकर्षण नहीं है, हालाँकि गुरुत्वाकर्षण मौजूद रहता है।
- **अंतरिक्ष से पृथ्वी का दृश्य**–कल्पना कीजिए कि आप एक शक्तिशाली रॉकेट में बैठे हैं। तीव्र गति और शोर के साथ रॉकेट वायुमंडल को चीरते हुए ऊपर जाता है। जैसे ही आप अंतरिक्ष में पहुँचते हैं, सब कुछ बदल जाता है। वहाँ गुरुत्वाकर्षण नहीं होता, इसलिए आप हवा में तैरने लगते हैं। अंतरिक्ष यान की खिड़की से बाहर देखने पर ब्रह्माण्ड का दृश्य मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता है। चारों ओर गहरा काला अंधेरा और उसमें चमकते हुए अनगिनत तारे और आकाशगंगाएँ दिखाई देती हैं।

वहाँ से हमारी पृथ्वी एक छोटी, नीली और

सुंदर गेंद जैसी दिखाई देती है। यह दृश्य हमें यह अहसास कराता है कि हम इस विशाल ब्रह्माण्ड का एक बहुत छोटा सा हिस्सा हैं। अंतरिक्ष की सैर में लड़कों का समूह यदि शामिल हो, तो उनका उत्साह देखने लायक होगा; वे विज्ञान के नए प्रयोगों को अपनी आँखों से होते हुए देख सकेंगे। बुजुर्ग महिलाएँ, जो कहानियों में चंद्रमा को 'चंदा मामा' कहती थीं, उनके लिए यह देखना सुखद होगा कि मनुष्य ने सच में वहाँ कदम रख दिए हैं।

- **वैज्ञानिक महत्व**–नए ग्रहों और ब्रह्माण्ड के रहस्यों की खोज का वैज्ञानिक महत्व यह है कि यह हमें पृथ्वी और ब्रह्माण्ड में अपने स्थान को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है, जीवन की उत्पत्ति और संभावनाओं के बारे में बताता है, पृथ्वी के भविष्य का अनुमान लगाने में सक्षम बनाता है, और ब्रह्माण्ड के निर्माण और विकास की हमारी समझ को गहरा करता है, जिससे हमारी खगोलीय समझ में क्रांति आती है।
- **उपसंहार**–अंतरिक्ष की यात्रा केवल रोमांच के लिए नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए ऊर्जा के नए स्रोत और रहने योग्य अन्य ग्रहों की खोज के लिए भी आवश्यक है। यद्यपि यह यात्रा कठिन और महँगी है, लेकिन वह दिन दूर नहीं जब अंतरिक्ष की सैर आम आदमी के लिए भी एक हकीकत बन जाएगी।

● ●